हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 27 जुलाई, 2025

11 बीआरसीएम ज्ञानकुंज स्कूल में हरियाली तीज पर मेहंदी प्रतियोगिता...

12 बच्चों में छिपी प्रतिभा को निखारने का अवसर देते ...

डॉ. योगेश चंद
कंसल्टेंट - ईएनटी (कान, नाक, गला)
MBBS, MS (ENT)
6+ वर्षों का अनुभव
MK हॉस्पिटल भिवानी
डॉ. योगेश चंद का हार्दिक स्वागत करता है।
डॉ. योगेश चंद MK हॉस्पिटल में ईएनटी (कान, नाक, गला) रोग विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएं देंगे।
पूर्व अनुभव :- Malik Multi-speciality Hospital, Hansi | Dr. RML Hospital, New Delhi | ESI Hospital, Rohini, New Delhi
आयुष्मान पैनल पर फ्री इलाज उपलब्ध*
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध
NABH मान्यता प्राप्त अस्पताल
एम्बुलेंस/आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क करें:
70 09 09 0924
MK Hospital
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध

भिवानी। बसों के रूट चेक करते हुए। फोटो: हरिभूमि

भिवानी। बसों का निरीक्षण करते एसडीएम व जीएम रोडवेज। फोटो: हरिभूमि

भिवानी। बवानीखेड़ा में महेंद्रगढ़ के लिए बसों को रवाना करते रोडवेज निरीक्षक।

भिवानी। बसों की सुविधा मिलने के बाद खुशी जताते परीक्षार्थी। फोटो: हरिभूमि

परीक्षार्थियों को खूब भायी शटल बस सेवा, प्रशासन की बदौलत पार हुआ परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाने का बेड़ा

35 घंटे से ड्यूटी पर डटे अफसर, चौक चौराहों पर पुलिस की तैनाती से जाम मुक्त हुआ शहर

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

शायद जितनी भागदौड़ चुनाव में भी नहीं होती हो,लेकिन सीईटी परीक्षा में अफसरों व कर्मचारियों की डयूटी बड़ी स्टीक रही। जिन अफसरों व कर्मचारियों की डयूटी सीईटी परीक्षा में लगी। वे करीब 35 घंटों से लगातार ड्यूटी दे रहे है। अधिकारियों की मुस्तैदी व कर्मचारियों के बेहतरीन सहयोग से ही परीक्षार्थियों के परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाने का बेड़ा(अभियान) पार हुआ। हालांकि अभी दो शिफ्टों की ही परीक्षा हुई,लेकिन 27 जुलाई को होने वाली परीक्षा अभी बाकी है।

शुक्रवार सुबह नौ बजे से जिला प्रशासन, जिनकी डयूटी लगी और रोडवेज के अधिकारी व कर्मचारी लगातार डयूटी दे रहे है। उनकी 35 घंटों की डयूटी व परीक्षा केंद्रों तक परीक्षार्थियों को पहुंचाने की योजना रंग भी लाई। योजना के हिसाब से जो परीक्षार्थी बस से पहुंचा। उसको प्रशासन ने शटल बस सेवा के जरिए परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाया। दूसरी तरफ पूरे शहर के हर चौक व चौराहों पर पुलिस बल भी जबरदस्त चौकस रहा। जिस वक्त परीक्षा छुटी तो सड़कों पर वाहनों का रेला उमड़ पड़ा,लेकिन पुलिस, यातायात पुलिस की मुस्तैदी के चलते शहर में जाम की स्थिति नहीं बन पाई। हर सौ से डेढ सौ मीटर पर पुलिस की जबरदस्त नाकाबंदी व वाहनों की लाइनों से यातायात व्यवस्था पटरी पर रही। एक दो बार किसी वाहन चालक ने बीच में कट मारने का प्रयास किया,लेकिन पुलिस की रिकवरी वैन ने उसको तत्काल रोक कर वाहनों का आवागमन सुचारू रखा। व्यवस्था देख कर हर किसी के मुख से व्यवस्था को लेकर वाह शब्द ..। ही निकल रहे थे।

भिवानी। शहर के बाहरी इलाके में वाहनों की लगी लम्बी लाइनों का दृश्य।

भिवानी में 35 लोकेशन पर 56 परीक्षा केंद्र बने

सीईटी परीक्षा के लिए हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के निर्देशानुसार शहर में 35 लोकेशन पर 56 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। जिला प्रशासन द्वारा परीक्षार्थियों को उनके परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाने के लिए शहर में सात रूट बनाए गए हैं, जिन पर शटल बस सेवा चलाई जा रही है, जो कि शनिवार को नियमित रूप से चली। सभी रूटों पर 35 ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त करने के साथ-साथ 40 ड्यूटी मजिस्ट्रेट रिजर्व में लगाए हैं। डीसी श्री गुप्ता द्वारा ड्यूटी मजिस्ट्रेट को निर्देश दिए गए हैं कि वे परीक्षार्थियों को उनके सेंटर तक पहुंचाने में मदद करें। भिवानी जिले के परीक्षार्थियों के लिए हिसार, रोहतक, सोनीपत, महेंद्रगढ़-नारनौल और चरखी दादरी में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। इन शहरों के लिए सरकार के निर्देशानुसार डीसी साहिल गुप्ता द्वारा बसों की व्यवस्था की गई है। शनिवार को पहले बस सेवा सुचारू रूप और अपने निर्धारित समय पर चली। डीसी साहिल गुप्ता के आदेशानुसार जीएम रोडवेज दीपक कुंडु ड्यूटी पर मुस्तैद रहे। भिवानी डिपो के साथ-साथ तोशाम, लोहारू, सिवानी, बवानीखेड़ा आदि सब डिपो के अलावा बहल, कैरू और ईशरवाल से परीक्षा केंद्रों से संबंधित शहरों के लिए बसें चली। महिला परीक्षार्थियों के साथ-साथ उनके साथ गए अभिभावकों में सरकार व जिला प्रशासन द्वारा की बसों की व्यवस्था के प्रति खुशी का भाव था।

दिव्यांग परीक्षार्थियों को ग्राम सचिवों ने परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाया

ग्रामीण अंचल से अनेक परीक्षार्थियों को ग्राम सचिवों ने उनके परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाने का काम किया। ग्राम सचिव अपने वाहनों से उनको अपने परीक्षा केंद्र तक लेकर आए। हरियाणा राज्य कर्मचारी चयन आयोग द्वारा 26 और 27 जुलाई को सीईटी की परीक्षा आयोजित की जा रही है। इस परीक्षा में अनेक दिव्यांग परीक्षार्थी हैं। जिला के दिव्यांग परीक्षार्थी भी भिवानी में बनाए गए विभिन्न 56 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा दे रहे हैं।

अन्नू के लिए वरदान बना डीसी का निर्देश

डीसी गुप्ता द्वारा परीक्षार्थियों की मदद के लिए दिए गए निर्देश हिसार जिले के गांव थुराना निवासी अन्नू पुत्री सुशील शर्मा के लिए वरदान बना। अन्नू का सुबह की शिफ्ट में सेक्टर 13 स्थित चौ. बंसीलाल पोलटेक्रि कॉलेज में सेंटर था, लेकिन भूलवश वह गांव प्रेम नगर स्थित चौ. बंसीलाल विवि के सामने पहुंच गई। ऐसे में अन्नू घबरा गई। वहां पर रिजर्व में तैनात ड्यूटी मजिस्ट्रेट जितेंद्र श्योराण ने अन्नू को रोते हुए देखा और उससे बात की। अन्नू के ताऊ अश्वनी शर्मा ने बताया कि वे गलती से प्रेम नगर पहुंच गए। इस पर जितेंद्र श्योराण ने अन्नू और उसके ताऊ को गाड़ी में बैठाया और निर्धारित परीक्षा पर पहुंचाया। अन्नू और उसके ताऊ ने ड्यूटी मजिस्ट्रेट और डीसी गुप्ता का आभार जताया।

अभिभावकों ने किया खुशी का इजहार

रोहतक परीक्षा देने गए बलियाली निवासी रवि दहिया, बवानीखेड़ा निवासी सचिन, अमर ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा सीईटी के लिए बहुत ही अच्छी व्यवस्था की गई है। गांव हालुवास निवासी सुंदर सिंह ने बताया कि वह अपनी बेटी का पेपर दिलाने महेंद्रगढ़ बस के माध्यम से जा रहा है, इससे उनको बहुत ही आसानी और चिंता दूर हुई है। बसों का सही प्रबंध होने से उनको किसी प्रकार की परेशानी नही है। उन्होंने कहा कि यदि सरकारी तौर पर बसों की व्यवस्था नहीं होती तो उनको अपने परीक्षा केंद्रों पर अन्य शहरों में दिक्कत होती। वहीं दूसरी ओर शहर में शटल बस सेवा भी नियमित रूप से चली। बड़ी संख्या में विद्यार्थी बस स्टैंड पर पहुंचे, जिनको शटल बस सेवा के माध्यम से उनको उनके निर्धारित परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाया गया। बस स्टैंड पर परीक्षार्थियों की मदद के लिए रोडवेज कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई थी।

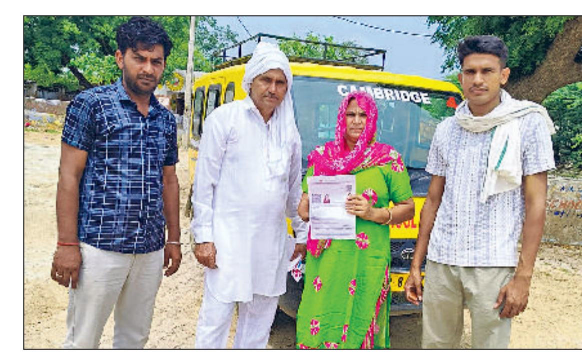
चरखी दादरी। प्रशासन द्वारा उपलब्ध करवाई गई बस से पहुंची दिव्यांग महिला।

सीईटी: 30 दिव्यांगों को घर से लाई बस और छोड़ा

चरखी दादरी। दादरी जिले में 17 परीक्षा केंद्रों पर सीईटी की परीक्षा दो सत्रों में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच संपन्न हुई। सरकार और प्रशासन की तरफ से परीक्षार्थियों के लिए पर्याप्त प्रबंध किए थे, केवल दिव्यांग परीक्षार्थियों के लिए जिले में ही परीक्षा केंद्रों निर्धारित किया गया था। पहले दिन दोनों सत्र के दौरान जिले के विभिन्न 9 गांवों से लगभग 30 दिव्यांग परीक्षार्थियों को उनके घर से परीक्षा केंद्र और फिर वापस उनके घर तक पहुंचाने की विशेष व्यवस्था की गई थी। जिले के लगभग 30 दिव्यांग दोनों सत्रों के दौरान उपायुक्त मुनीश शर्मा स्वयं व्यवस्थाओं की निगरानी कर रहे थे। परीक्षा देने आए युवा भी व्यवस्थाओं से संतुष्ट दिखे। प्रत्येक परीक्षा केंद्रों के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट लगाए गए थे। ड्यूटी मजिस्ट्रेट की निगरानी व पुलिस सुरक्षा में प्रश्न पत्रों को परीक्षा केन्द्र तक पहुंचाया और पूरी प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी करवाई गई।

तीन आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज

बहल। नूनसर गांव निवासी सेवानिवृत्त सीआरपीएफ जवान भूपसिंह से रेलवे और पुलिस में नौकरी लगवाने के नाम पर करीब 73 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। शिकायतकर्ता की दरखास्त पर थाना बहल पुलिस ने तीन आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज किया है। पुलिस में दी शिकायत के अनुसार गांव नुनसर निवासी भूपसिंह ने बताया कि उसने वर्ष 2018 में रेलवे में ग्रुप डी की भर्ती के दौरान अपने बेटे अमित का फार्म भरा था। इसी दौरान कश्मीरी लाल, उसकी पत्नी अनीता व उसके साले धर्मबीर ने नौकरी का झांसा देकर पहले बातचीत की और फिर दूसरे अन्य लोगों की भर्ती करवाने के नाम पर 73 लाख रुपये ले लिये। भूपसिंह ने बताया कि यह पैसा उनके रिश्तेदारों व जानकारों से इकट्ठा कर 27 उम्मीदवारों की भर्ती के नाम पर आरोपियों को दिया, जिनमें से 13 लाख रुपये कश्मीरी लाल, 20 लाख रुपये अनीता और 40 लाख रुपये धर्मबीर को दिए गए थे। साथ ही 3.33 लाख रुपये की बैंक ट्रांजैक्शन की रसीदें।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NBA ACCREDITED BY B.TECH ME, ECE and MBA

Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
GITAM is among the BEST ENGINEERING INSTITUTES OF THE COUNTRY !
RANKED #19 in North India | RANKED #39 Pvt. Institutes in India | RANKED #41 Across India | RANKED #62 Placement Across India
Times Engineering Institute Ranking Survey-2025
ADMISSIONS OPEN 2025-26
B.TECH | B.TECH (LEET)
CSE, CSE (DS), CSE (AI & ML), FIRE TECH. & SAFETY, ELECTRICAL MECHANICAL, ELECTRONICS & COMMUNICATION ENGG., CIVIL
M.TECH | MBA | BBA | MCA | BCA | B.ARCH | M.ARCH | B.ED | M.ED
COURSES FOR WORKING PROFESSIONALS IN FLEXIBLE TIMINGS
B.TECH (FIRE TECH. & SAFETY) | B.TECH (CSE) | M.TECH (CSE)| MBA
For Admission Enquiry 8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946
www.gangainstitute.com
GANGA GROUP OF INSTITUTIONS
Approved by AICTE/UGC/NCTE/COA/MDU
GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP) 9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE) 8684000916 | www.gangainstituteofeducation.com
Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi | +91-9654292902, 03, 04

CHINAR FABRICS
चिनार मिल शोरूम
FESTIVAL MEGA SALE
3 शर्ट 1299/- | 2 पैन्ट 1299/- | 2 जीन्स 1799/-
1 ब्लेजर 1499/- | 2 जैकेट 1599/-
यह ऑफर 28 जुलाई 2025 (सोमवार) से शुरू है।
नजदीक बासिया भवन, हांसी रोड, भिवानी
M. : 70567-95900

पांच साल में पैसों को डबल, ट्रिपल करने वाले सात फंड, निवेशकों को बड़ा फायदा

■ हाइब्रिड कैटेगरी की स्कीम्स ने इक्विटी को दी कड़ी टक्कर
■ बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स ने 5 साल में दिया बढ़िया रिटर्न
■ निवेशकों के पैसों को दो से तीन गुना तक कर दिया

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड्स से हाई रिटर्न हासिल करने की बात हो तो आम तौर पर हमारा ध्यान इक्विटी स्कीम की तरफ ही जाता है, लेकिन हाइब्रिड फंड्स की एक कैटेगरी ऐसी है, जो निवेशकों को ऊंचा रिटर्न देने के मामले में इक्विटी फंड्स को टक्कर दे सकती है। ये कैटेगरी है डायनैमिक एसेट एलोकेशन फंड्स यानी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स की। इस कैटेगरी के टॉप 7 फंड्स ने 5 साल में निवेशकों के पैसों को डबल-ट्रिपल करके दिखाया है। साथ ही सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) पर भी इनका सालाना रिटर्न काफी आकर्षक रहा है। इन टॉप 7 बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, निप्पॉन इंडिया, आईसीआईसीआई प्रू, टाटा म्यूचुअल फंड, बड़ौदा बीएनपी परीबा और आदित्य बिरला सनलाइफ जैसे दिग्गज फंड हाउस की स्कीम शामिल हैं।

ऐसा रहा प्रदर्शन

टॉप 7 बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स का पिछले 5 साल का एनुअल रिटर्न करीब 15% से 24% तक रहा है. इन सभी फंड्स ने 5 साल पहले किए गए 1 लाख रुपये के निवेश को दो लाख से तीन लाख रुपये में तब्दील कर दिया है. इतना ही नहीं, इन सभी फंड्स ने **SIP** के जरिये किए गए निवेश पर भी साल दर साल 13% से लेकर 21% तक का एन्युलाइज्ड रिटर्न दिया है. आइए डालते हैं इन सभी फंड्स के पिछले प्रदर्शन पर एक नजर।

1. एचडीएफसी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
● 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 24.62%
● 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 3 लाख रुपये
● 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 10.12 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न: 21.02%)

2. बड़ौदा बीएनपी परीबा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
● 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 17.03%
● 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.20 लाख रुपये
● 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.89 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न: 15.74 %)

3. एडेलवाइज बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
● 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.92%
● 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.09 लाख रुपये
● 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.44 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.6%)

4. आदित्य बिरला सनलाइफ बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
● 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.71%
● 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.08 लाख
● 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.60 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 14.4%)

5 साल में 15 से 24% तक एनुअल रिटर्न दिया

5. निप्पॉन इंडिया बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
● 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.67%
● 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.07 लाख रुपये
● 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.52 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 14.02%)

6. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
● 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.52%
● 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.06 लाख रुपये
● 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.52 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.99%)

7. टाटा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
● 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 14.99%
● 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.01 लाख रुपये
● 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.32 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.03%)

बेंचमार्क और रिस्क लेवल

इन सभी हाइब्रिड फंड्स का बेंचमार्क इंडेक्स इन दो में से कोई एक है - निफ्टी 50 हाइब्रिड कंपोजिट डेट 50:50 इंडेक्स, जिसका पिछले 5 साल का सीएजीआर 12.70% रहा है या क्रिसिल हाइब्रिड 50+50 मॉडरेट इंडेक्स, जिसका 5 साल का सीएजीआर 13.62% है। सभी 7 फंड्स को रिस्कोमीटर पर बहुत अधिक जोखिम की रेटिंग दी गई है।

बैलेंस्ड एडवांटेज फंड की निवेश रणनीति

पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट के बीच फंड एलोकेशन को वक्त के हिसाब से बदलने की रणनीति बैलेंस्ड एडवांटेज फंड या डायनैमिक एसेट एलोकेशन फंड (**Balanced Advantage Fund or Dynamic Assest Allocation**) की सबसे बड़ी खूबी है. इस रणनीति की बदौलत ये म्यूचुअल फंड बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच भी बेहतर और स्टेबल रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं. सेबी के नियमों के तहत इन फंड्स के मैनेजर को इक्विटी और डेट के बीच अपना फंड एलोकेशन जीरो से 100% तक बदलते रहने की छूट मिली हुई है। इस रणनीति का एक फायदा यह भी है कि अगर फंड मैनेजर इक्विटी में निवेश को 65% या उससे ऊपर रखता है, तो इसमें निवेश पर इक्विटी फंड्स की तरह टैक्स बेनिफिट भी मिल सकते हैं। हालांकि इक्विटी में ज्यादा एक्सपोजर की संभावना के कारण बैलेंस्ड एडवांटेज फंड में रिस्क भी अधिक रहता है. इसलिए इनमें निवेश का फैसला करने से पहले अपनी रिस्क बर्दाश्त करने की क्षमता को परख लेना चाहिए और हमेशा लंबी अवधि के लिए पैसे लगाने की तैयारी रखनी चाहिए. साथ ही यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि म्यूचुअल फंड का पिछला रिटर्न भविष्य में जारी रहने की गारंटी नहीं होती।

(डिस्क्लेमर : इस आर्टिकल का उद्देश्य सिर्फ जानकारी देना है, निवेश की सलाह देना नहीं, निवेश का कोई भी फैसला अपने इनवेस्टमेंट एडवाइजर की सलाह लेने के बाद ही करें।)

जीवन में आगे बढ़ने के साथ-साथ, बढ़ाते जाएं अपना निवेश, जल्द बनेंगे करोड़पति

■ हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें, इससे बढ़िया रिटर्न मिलेगा
■ अपनी रिस्क क्षमता को जांच लें, अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाएं
■ हर साल अपने सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान को भी अपग्रेड करें
■ अपनी कमाई का कम से कम दस फीसदी हिस्सा बचत में लगाएं

सुझाव
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेश के जरिये अच्छा पैसा जुटाना चाहते हैं तो अपने जीवन में आगे बढ़ने के साथ साथ निवेश को भी बढ़ाते जाएं। इससे आपको जल्द करोड़पति बनने से कोई नहीं रोक पाएगा। आप अपने सपने आसानी से पूरे कर पाएंगे। इसके लिए जरूरी है, अपने लक्ष्य तय करें और लंबी अवधि के लिए निवेश का प्लान बनाए। अपने जीवन में आगे बढ़ने के साथ साथ निवेश को भी बढ़ाते जाएं यानी निवेश के लिए स्टेप-अप एसआईपी के फार्मूले को अपनाएं। अपने अनावश्यक खर्चों पर लगाम लगाएं और अपनी इनकम का कम से कम दस फीसदी निवेश जरूर करें और इसे हर साल बढ़ाते जाएं। फिर देखना आपका पैसा दिन दूनी और रात चौगुनी के साथ बढ़ेगा। नए अवसर, बड़े सपने और बदलती जीवनशैली के साथ जीवन आगे बढ़ते रहने की कहानी है। जैसे-जैसे आपकी आय बढ़ती है, वैसे-वैसे आपकी ख्वाहिशें और खर्च भी बढ़ते हैं। क्या आपकी निवेश रणनीति भी इसी रफ्तार से आगे बढ़ रही है? जिस तरह आप अपने सपनों की नई बाइक खरीदते हैं, या बेहतर घर में शिफ्ट होते हैं, उसी तरह जरूरी है कि आप अपने एसआईपी (सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान) को भी अपग्रेड करें ताकि, वो आपके बदलते जीवन के साथ कदम से कदम मिला सके। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि स्टेप-अप एसआईपी (एसआईपी राशि को बढ़ाना) क्या है और कैसे यह आपको वित्तीय रूप से आगे बनाए रखने में मदद करता है।

स्टेप-अप एसआईपी क्या है

■ स्टेप-अप एसआईपी (जिसे टॉप-अप एसआईपी भी कहा जाता है) एक ऐसी सुविधा है जिसमें आप अपने एसआईपी निवेश को तय अंतराल पर (सालाना या अर्धवार्षिक) एक निश्चित राशि या प्रतिशत के हिसाब से बढ़ा सकते हैं। इसका मतलब है कि हर महीने एक ही राशि निवेश करने की बजाय, आप जैसे-जैसे कमाते हैं, वैसे-वैसे अपना निवेश भी बढ़ाते हैं। इसलिए स्टेप-अप एसआईपी जरूरी : बढ़ती आय और खर्चों के साथ तालमेल

■ जब आपकी सैलरी बढ़ती है या प्रमोशन होता है, तो आपकी जीवनशैली भी बेहतर होती है। शायद आप नई बाइक खरीदते हैं, बेहतर फ्लैट में शिफ्ट होते हैं, या खूब घूमते हैं। ऐसे में खर्च बढ़ता है और आर्थिक लक्ष्य भी बड़े हो जाते हैं। एसआईपी को स्टेप-अप करके आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी बढ़ती आय और आकांक्षाओं के साथ आपके निवेश का तालमेल बना रहे।

महंगाई को मात

हर साल महंगाई की वजह से जीवन-यापन में होने वाला खर्च बढ़ता रहता है। अगर आपकी एसआईपी की राशि एक समान ही रहती है, तो भविष्य में वह आपकी जरूरतों, लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाएगी। एसआईपी बढ़ाने से आपका निवेश तेजी से बढ़ता है और आप महंगाई के असर से बेपरवाह रह सकते हैं।

स्टेप-अप एसआईपी कैसे काम करता है?

▸▸ मान लीजिए आप 5,000 रुपये प्रति माह की एसआईपी शुरू करते हैं, जिसमें हर साल 1,000 रुपये स्टेप-अप करते हैं।
▸▸ पहले साल में, आप 5,000 रुपये/माह निवेश करते हैं
▸▸ दूसरे साल में, यह 6,000 रुपये/माह हो जाता है
▸▸ तीसरे साल में, 7,000 रुपये/माह, और यह इसी तरह आगे बढ़ता है।
▸▸ इस तरह धीरे-धीरे बढ़ती एसआईपी आपकी बढ़ती सैलरी के साथ मेल खाती है। जैसे-जैसे आपका वेतन बढ़ता है, आपका निवेश भी बढ़ता है और आपकी जेब पर भी एकसाथ ज्यादा बोझ नहीं पड़ता।

असरदार तरीका

स्टेप-अप एसआईपी यह सुनिश्चित करने का एक आसान, लेकिन असरदार तरीका है कि आपका निवेश आपकी ज़िंदगी की गति के साथ आगे बढ़े। जैसे-जैसे आपकी आमदनी और ज़रूरतें बढ़ती हैं आप अपनी एसआईपी को बढ़ाकर नए सपनों और आर्थिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे।

बड़े लक्ष्य जल्दी हासिल करें

स्टेप-अप एसआईपी के ज़रिए आप अपने आर्थिक लक्ष्यों को जल्दी हासिल कर सकते हैं। इसकी मदद से आप बड़े सपनों जैसे लग्ज़री कार, विदेश यात्रा या रिटायरमेंट के लिए बड़ी रकम को भी बिना किसी आर्थिक तनाव के हसिल कर सकते हैं।

चक्रवृद्धि ब्याज़ की ताकत का जादू

हर साल एसआईपी की राशि थोड़ी सी भी बढ़ाने पर लंबे समय में आपकी संपत्ति में बड़ा फ़र्क देखने को मिल सकता है। जितनी जल्दी और जितना अधिक आप निवेश करते हैं, रिटर्न उतना ही ज़्यादा होता है। इसी को चक्रवृद्धि ब्याज़ की ताकत कहते हैं।

आईटीआर फाइलिंग : कुछ गलतियों की वजह से आ सकता है नोटिस

● जुर्माना भी लग सकता है और रिटर्न रिजेक्ट होने का भी रहता है खतरा ● टैक्सपेयर्स अक्सर आईटीआर फॉर्म चुनने में कर जाते हैं बड़ी गलतियां ● वेरिफिकेशन में गलती करते हैं, तो बढ़ सकती है आपकी परेशानी

जानकारी
बिजनेस डेस्क

इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) फाइल करना हर साल टैक्सपेयर्स के लिए एक जरूरी काम होता है, लेकिन कई बार इसमें छोटी-छोटी गलतियां उनके लिए भारी पड़ जाती हैं। वित्त वर्ष 2024-25 (असेसमेंट ईयर 2025-26) के लिए इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने की आखिरी तारीख 15 सितंबर 2025 तक है। इस बीच इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने आईटीआर-1, 2, 3 और 4 के लिए एक्सेल यूटिलिटी जारी कर दी हैं, जिससे प्रक्रिया शुरू करने का रास्ता साफ हो गया है। हालांकि, जल्दबाजी या जानकारी की कमी के कारण कई बार टैक्सपेयर्स ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जो नोटिस, जुर्माना या रिटर्न के रद्द होने का कारण बन सकती हैं। आइए जानते हैं, सात ऐसी आम गलतियों के बारे में, जिनसे टैक्सपेयर्स को बचना चाहिए।

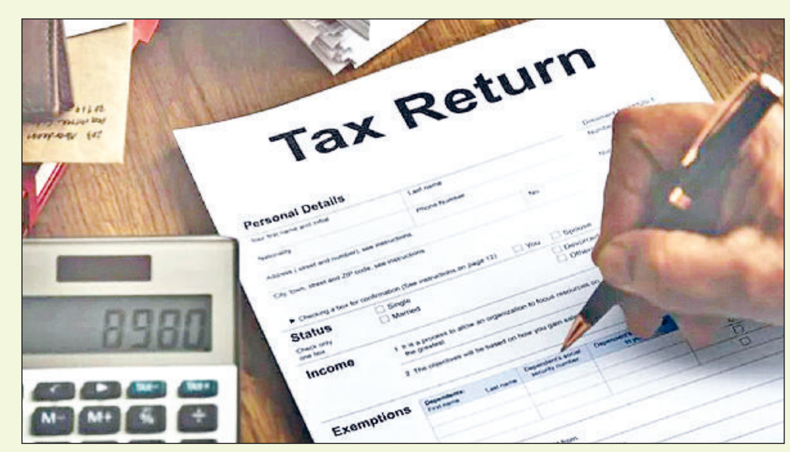

गलत आईटीआर फॉर्म चुनना

सबसे आम गलती है गलत आईटीआर फॉर्म का चयन। हर फॉर्म खास तरह की आय और टैक्सपेयर्स के लिए बनाया गया है। मिसाल के तौर पर, अगर आपने शेयरों की बिक्री से 1.25 लाख रुपये से ज्यादा का लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन कमाया है या आपके पास किसी विदेशी बैंक में अकाउंट है, तो आप आईटीआर-1 की जगह आईटीआर-2 भरना होगा। गलत फॉर्म चुनने से आपकी रिटर्न 'डिफेक्टिव' मानी जा सकती है या इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से नोटिस आ सकता है। इसलिए, अपनी आय के सोर्स को ध्यान से देखें और सही फॉर्म चुनें।

सभी आय के सोर्स न बताना

कई टैक्सपेयर्स अपनी सारी आय को रिटर्न में नहीं दिखाते, चाहे वह टैक्सेबल हो या नहीं। मसलन, बचत खाते का ब्याज, फिक्स्ड डिपॉजिट का ब्याज, किराए की आय या शेयरों से डिविडेंड को छिपाना गलत है। भले ही बचत खाते के ब्याज पर 10,000 रुपये तक की छूट मिलती हो, लेकिन इसे रिटर्न में दिखाना जरूरी है। आय छिपाने से इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की नजर में आप गलत ठहर सकते हैं, जिससे नोटिस या जुर्माना लग सकता है।

नौकरी बदलने पर आय छिपाना

अगर आपने वित्त वर्ष में नौकरी बदली है, तो दोनों एम्प्लॉयर्स से मिली आय को रिटर्न में दिखाना जरूरी है। दोनों की फॉर्म-16 को ध्यान से देखें और सुनिश्चित करें कि कोई आय छूट न जाए। कई बार टैक्सपेयर्स पुराने एम्प्लॉयर की आय या टीडीएस की जानकारी छोड़ देते हैं, जो गलत है। एआईएस में आपकी सारी आय की जानकारी होती है, इसलिए इसे छिपाने की कोशिश न करें, वरना नोटिस का सामना करना पड़ सकता है।

फॉर्म 26एएस की जांच न करना

रिटर्न फाइल करने से पहले फॉर्म 26 एएस और एनुअल इन्फॉर्मेशन स्टेटमेंट (एआईएस) की जांच करना जरूरी है। ये डॉक्यूमेंट्स आपकी आय, टीडीएस और बड़े लेनदेन की जानकारी देते हैं। अगर इनमें कोई गलती है, जैसे बैंक द्वारा काटा गया टीडीएस गलत दिख रहा हो, तो उसे ठीक करवाएं। इन डॉक्यूमेंट्स का मिलान फॉर्म-16, बैंक स्टेटमेंट और अन्य रिकॉर्ड से करें। अगर जानकारी में अंतर हुआ, तो इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से नोटिस आ सकता है।

गलत डिडक्शन का दावा करना

कई टैक्सपेयर्स बिना सबूत के सेक्शन 80सी, 80डी या अन्य छूट का दावा कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों की स्कूल फीस, एलआईसी प्रीमियम या मेडिकल इंश्योरेंस के लिए छूट तभी ले सकते हैं, जब आपके पास वैध डॉक्यूमेंट हों। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट अब एआईएस और एआई टूल्स के जरिए ऐसी गलतियों को आसानी से पकड़ लेता है। अगर आप बिना सबूत के छूट लेते हैं, तो नोटिस मिल सकता है या रिटर्न रद्द हो सकता है।

विदेशी संपत्ति की जानकारी न देना

अगर आपके पास विदेशी बैंक खाता, शेयर या दूसरी संपत्ति है, तो उसे रिटर्न में बताना जरूरी है। बजट 2024 में नियमों में थोड़ी ढील दी गई है, जिसमें 20 लाख रुपये तक की चल संपत्ति को न दिखाने की छूट दी गई है। लेकिन इसके बावजूद, पूरी जानकारी देना अनिवार्य है। विदेशी संपत्ति छिपाने पर पहले 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगता था, लेकिन नए नियमों के बावजूद सावधानी बरतें।

रिटर्न का वेरिफाई न करना

रिटर्न फाइल करने के बाद उसे 30 दिनों के अंदर वेरिफाई करना जरूरी है। यह सत्यापन आधार ओटीपी , नेट बैंकिंग या आईटीआर वी को डाक से भेजकर किया जा सकता है। अगर आप वेरिफाई नहीं करते, तो रिटर्न को अमान्य माना जाता है, जैसे कि आपने रिटर्न फाइल ही नहीं किया। कई टैक्सपेयर्स यह भूल जाते हैं, जिससे उनकी रिटर्न प्रक्रिया अधूरी रह जाती है और जुर्माना लग सकता है।

ऋण एमएफ लोन पर ब्याज दर सोने या एफडी पर लोन से अधिक, लोन लेने का फैसला करने से पहले सभी विकल्पों पर विचार करें

अपने म्यूचुअल फंड निवेश को बेचने के बजाय, आप उन पर लोन ले, इससे आपकी एसआईपी चलती रहेगी

म्यूचुअल फंड पर भी ले सकते हैं लोन, लेकिन जान लें कुछ बातें क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन की तुलना में एमएफ पर लोन सस्ता

समझदारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी लोन लेन जा रहे हैं और म्यूचुअल फंड (एमएफ) में निवेश करते हैं जो आपके लिए म्यूचुअल फंड पर लोन लेना बेहतर विकल्प हो सकता है। चूंकि म्यूचुअल फंड पर लोन क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन की तुलना में काफी सस्ता होता है। हालांकि इसकी ब्याज दर सोने या एफडी पर लोन लेने की तुलना में अधिक हो सकती हैं। फिर भी लोन लेने से पहले सभी विकल्पों पर विचार कर लिया जाना चाहिए। इससे आप आसानी से और सस्ती ब्याज दरों पर लोन ले सकेंगे। जीवन में कई कारणों से कभी-कभी अस्थायी रूप से पैसों की तंगी का सामना करना पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, यह घर के नवीनीकरण, परिवार में शादी या किसी चिकित्सा आपात स्थिति के कारण हो सकता है। ऐसी नकदी की तंगी की स्थिति में, सबसे पहला विचार यही आता है कि अपनी बचत का इस्तेमाल करें और नुकसान होने पर भी अपने निवेश को बेच दें। और अगर इससे भी काम न चले, तो आप ऋण लेने की सोचते हैं। हालांकि, निवेश को बेचना सबसे अच्छा उपाय नहीं है। अपने म्यूचुअल फंड निवेश को बेचने के बजाय, आप उन पर लोन ले सकते हैं। जी हां, जैसे आप लोन के लिए सोना और रियल एस्टेट जैसी अन्य संपत्तियां गिरवी रख सकते हैं, वैसे ही आप बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) से अपने म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स पर लोन ले सकते हैं। एमएफ पर लोन लेने से पहले आप 6 प्रमुख बातों के बारे में जान लें। ये आपके काफी काम आएंगी।

म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स की एक सीमा तक ही ऋण मिलेगा

आपके म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स के बदले आपको मिलने वाले ऋण की राशि काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि आपने किस प्रकार की म्यूचुअल फंड योजना में निवेश किया है और आप किस वित्तीय संस्थान से ऋण लेंगे। उदाहरण के लिए, एचडीएफसी और आईसीआईसीआई जैसे बैंक आपको इक्विटी म्यूचुअल फंड के मामले में नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) के 50% तक और डेट म्यूचुअल फंड के मामले में 80% तक का लोन देते हैं। दूसरी ओर, एक्सिस बैंक आपकी डेट म्यूचुअल फंड योजनाओं के मूल्य के 85% तक और इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं के मूल्य के 60% तक का लोन प्रदान करता है।

सभी बैंक सभी म्यूचुअल फंडों पर ऋण नहीं देते

कई बैंक केवल उनके द्वारा चयनित म्यूचुअल फंड योजनाओं के आधार पर ही ऋण देते हैं। उदाहरण के लिए, एसबीआई केवल एसबीआई म्यूचुअल फंड की म्यूचुअल स्कीमों पर ही ऋण देता है। एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक भी उन स्कीमों के बारे में चयनात्मक हैं जिन पर वे ऋण देते हैं। ये दोनों निजी बैंक कंप्यूटर एज मैनेजमेंट सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड (सीएएमएस) के साथ पंजीकृत एसेट मैनेजमेंट कंपनियों द्वारा प्रबंधित म्यूचुअल फंड स्कीमों पर ऋण प्रदान करते हैं। इसी प्रकार, एक्सिस बैंक ने अपनी वेबसाइट पर म्यूचुअल फंड योजनाओं का एक सेट सूचीबद्ध किया है, जिसके आधार पर वह धन उधार देता है।

मिलने वाला ऋण राशि की ऊपरी सीमा

किसी भी प्रकार के ऋण की तरह, म्यूचुअल फंड पर दिए जाने वाले ऋणों की भी कुछ सीमाएं होती हैं। कई बैंकों ने आपको मिलने वाले ऋण की अधिकतम और न्यूनतम सीमा तय कर रखी है। उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई बैंक जैसे अधिकांश बड़े निजी बैंकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड के मामले में न्यूनतम ऋण राशि 50,000 रुपये और अधिकतम राशि 20 लाख रुपये तथा डेट म्यूचुअल फंड के मामले में 1 करोड़ रुपये तक निर्धारित की है। एनबीएफसी के मामले में, न्यूनतम और अधिकतम दोनों सीमाएं आमतौर पर ज़्यादा होती हैं। उदाहरण के लिए, आदित्य बिड़ला फाइनेंस में न्यूनतम ऋण राशि 25 लाख रुपये और अधिकतम 10 करोड़ रुपये है। बजाज फिनसर्व के मामले में भी यही स्थिति है।

ऋण की लागत व्यक्तिगत ऋण व क्रेडिट कार्ड ऋण से कम

म्यूचुअल फंड पर लोन का एक प्रमुख लाभ यह है कि आपको क्रेडिट कार्ड लोन या पर्सनल लोन की तुलना में कम ब्याज दर मिलती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि म्यूचुअल फंड पर लोन सुरक्षित होते हैं, यानी उनके पीछे कोई संपार्श्विक होता है। उदाहरण के लिए, आपको म्यूचुअल फंड पर लिए गए लोन पर 8-10% की ब्याज दर चुकानी होगी। यह आपके द्वारा चुनी गई बैंक और म्यूचुअल फंड योजनाओं के आधार पर अलग-अलग होगा। अगर आप डेट फंड योजनाओं की यूनिटें गिरवी रखते हैं तो ब्याज दर कम होती है, और अगर आप इक्विटी फंड की यूनिटें गिरवी रखते हैं तो ब्याज दर ज़्यादा होती है।

दूसरी ओर, क्रेडिट कार्ड लोन या पर्सनल लोन जैसे असुरक्षित लोन के मामले में, लोन आपकी किसी भी वित्तीय संपत्ति द्वारा समर्थित नहीं होता है। इसलिए, बैंक द्वारा उठाए जा रहे उच्च जोखिम के अनुरूप, आपसे 8-10% से अधिक ब्याज दर वसूलने की संभावना होती है।

गिरवी रखी गई एमएफ यूनिटों पर रिटर्न मिलता रहेगा

जब आप अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स को गिरवी रखकर उन पर लोन लेते हैं, तो वे यूनिट्स बाज़ार में निवेशित रहती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स किसी बैंक में गिरवी रखते हैं, तो आप बैंक को यह अधिकार देते हैं कि वह म्यूचुअल फंड यूनिट्स को तभी बेचे जब आप डिफॉल्ट करें। लेकिन जब तक आप डिफॉल्ट नहीं करते, तब तक आपके निवेश बाज़ार से जुड़े रहते हैं और आप उन पर रिटर्न कमाते रहते हैं। इस प्रकार, आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी वित्तीय योजना अभी भी बरकरार है और साथ ही आप किसी भी यूनिट को भुनाए बिना अल्प सूचना पर आवश्यक पूंजी जुटा सकते हैं।

ऑनलाइन कर सकते हैं आवेदन

तकनीक की बदौलत, एसबीआई, एचडीएफसी, आईसीआईसीआई जैसे कई बैंक अब आपके म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स पर ऑनलाइन लोन दे रहे हैं। आपको बस अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स ऑनलाइन गिरवी रखनी हैं और अपने खाते में ओवरड्राफ्ट लिमिट सेट करवानी है। ओवरड्राफ्ट सुविधा का मतलब है आपके बैंक के साथ एक क्रेडिट समझौता जिसके तहत आप अपने खाते में जमा राशि से ज़्यादा पैसे निकाल सकते हैं। इसकी एक पूर्व-स्वीकृत सीमा होती है।

खबर संक्षेप

विधायक कपूर ने देखा गांव में जमा बारिश का पानी

बवानीखेड़ा। हल्का बवानी खेड़ा के गांव पुर में बरसाती पानी का जाएज़ा लेने विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि पहुंचे वहा पहुंचने पर आँखों देखा हाल जाना और गली में आगे जाने के लिए विधायक गली के रुके हुए पानी में से गुजरे और विधायक ने लोगो के बीच में बैठ कर उनकी समस्या सुनी और विधायक ने अधिकारियों के पास फोन करके निर्देश दिए गांव पुर का बरसाती पानी का जल्द से जल्द समाधान किया जाए और मोके पर अधिकारी आये और बरसाती पानी निकलने का कार्य शुरु किया।

महावीर जैन का निधन लोगों ने जताया शोक

लोहारू। श्रीगोपाल गौशाला समिति के प्रधान महावीर प्रसाद जैन का शनिवार को हृदयगति रुकने से निधन हो गया। वे लगभग 79 वर्ष के थे और पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। वे अपने पीछे दो पुत्रों पवन जैन व प्रदीप जैन सहित नाति पौत्रों का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनका अंतिम संस्कार रविवार को सुबह 9 बजे लोहारू रामबाग में किया जाएगा। उनके निधन पर गौशाला कमेटी के श्यामसुंदर शर्मा, राजीव वत्स, ललित बजाज, राजेश कुमार, रमेश कौशिक सोहांसरा, मिंटू डेला, रोबिन अरोड़ा, प्रयास संगठन के मा. पवन स्वामी, डॉ उमेद जांगिड़, महेंद्र कथूरिया सहित अनेक संगठनों के लोगों ने शोक प्रकट किया है।

मूर्ति और सज्जन भाजपा कार्यकारिणी सदस्य नियुक्त

बहल। भारतीय जनता पार्टी द्वारा घोषित जिला कार्यकारिणी में बहल क्षेत्र के दो लोगों को स्थान मिला है। सज्जन फौजी बिधनोई व मूर्ति हरियावास को उनकी पार्टी के प्रति निष्ठा एवं कार्यभाव को देखते हुए उनको जिला कार्यकारिणी का सदस्य बनाया है। दोनों कार्यकर्ताओं की नियुक्ति पर क्षेत्र में खुशी की लहर है। भाजपा जिला उपाध्यक्ष सुनील शर्मा, सरपंच साधूराम पनिहार, बीडीसी वाइस चेयरमैन प्रमिला मान सुधीवास, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य रविन्द्र मंढोली, पूर्व सरपंच रवि महमिया, पूर्व सरपंच गजानंद अग्रवाल सहित अन्य कार्यकर्ताओं ने सज्जन फौजी बिधनोई आदि का आभार जताया।

स्व. भगवान सिंह का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणाः श्रुति

चरखी दादरी। प्रदेश की सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी ने झोझूकलां निवासी स्वर्गीय भगवान सिंह पटवारी के निधन पर उनके घर पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित दी । इस अवसर पर श्रुति चौधरी ने कहा कि स्वर्गीय भगवान सिंह ने वर्षों तक भारतीय सेना में रहते हुए देश की सेवा की। सेना से रिटायरमेंट के बाद उन्होंने पटवारी की नौकरी ज्वाइन की और ईमानदारी से अपना ड्यूटी निभाई।

मेहंदी प्रतियोगिता में मोनिका प्रथम व दीपिका द्वितीय

बीआरसीएम ज्ञानकुंज स्कूल में हरियाली तीज पर मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन

तीज नारी शक्ति के आत्म-संवर्धन, प्रकृति के सम्मान और सामाजिक सौहार्द का प्रतीक: सरस्वती दीक्षित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहन

भिवानी। मेहंदी प्रतियोगिता के दौरान मेहंदी दिखाती छात्राएं। व प्रतियोगिता में रचाई मेंहदी दिखते छात्राएं और अध्यापिकाएं। फोटो: हरिभूमि

बीआरसीएम ज्ञानकुंज स्कूल बहल की एनएसएस इकाई द्वारा हरियाली तीज पर विद्यालय परिसर में मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस आयोजन में एनएसएस वॉलंटियर्स, विशेष रूप से स्वयंसेविकाओं ने पारंपरिक परिधानों में सज-धजकर उत्साहपूर्वक भाग लिया और वातावरण को एक जीवंत सांस्कृतिक उत्सव में परिवर्तित कर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की उप-प्रधानाचार्या सरस्वती दीक्षित के प्रेरणादायक उद्बोधन से हुआ।

उन्होंने छात्राओं को तीज पर्व के सांस्कृतिक एवं पारंपरिक महत्व से अवगत कराते हुए कहा कि तीज नारी शक्ति के आत्म-संवर्धन, प्रकृति के सम्मान और सामाजिक सौहार्द का प्रतीक पर्व है। कई छात्राओं ने नारी सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, भारतीय लोक परंपराओं को अपनी मेहंदी डिजाइनों में रचनात्मक रूप से उकेरा। निर्णायक मंडल में उपस्थित डॉ. डिंपल त्यागी एवं सुश्री खुशबू चौधरी ने अत्यंत निष्पक्ष एवं विवेकपूर्ण मूल्यांकन करते हुए प्रतिभागियों की थीम, कलात्मकता, सफाई व प्रस्तुति के आधार पर विजेताओं का चयन किया। मेहंदी प्रतियोगिता में मोनिका ने प्रथम, दीपिका ने द्वितीय, खुशबू एवं रितिका ने संयुक्त रूप से तृतीय व रिया ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। प्राचार्य राजेश कुमार झाझरिया ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि हरियाली तीज हमारे संस्कारों, पर्यावरण एवं नारी गौरव से जुड़ा हुआ पर्व है। बीआरसीएम शिक्षण समिति निदेशक डॉ. एसके सिंहा ने सभी प्रतिभागियों के प्रयासों और उनकी कलात्मक प्रस्तुति की सराहना कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

बीआर संस्था में मनाई तीज

चरखी दादरी। सावन के महीने की मस्ती और हरियाली के प्रतीक तीज महोत्सव को बीआर शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित आईपीएस स्कूल में बड़े ही धूमधाम एवं पारंपरिक उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर स्कूल परिसर को हरे रंग के गुब्बारों और फूलों से सजाया, जिससे चारों ओर उत्सव का माहौल छा गया। विद्यार्थियों और शिक्षकों ने पारंपरिक परिधानों में सजकर कार्यक्रम में हिस्सा लिया। छात्राओं ने सावन के गीतों पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए, जिसमें पारंपरिक लोकनृत्यों ने दर्शकों का मन मोह लिया। इस दौरान विद्यालय में झूले डाले, जिन पर झूलते हुए छात्र-छात्राओं ने सावन के गीतों का आनंद लिया। कक्षा छठी से बारहवीं की छात्राओं ने सुंदर मेहंदी से एक-दूसरे के हाथों को सजाया। इन गतिविधियों में अध्यापिकाओं ने भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर प्राइमरी एचओडी अंजू अरोड़ा ने कहा कि तीज महोत्सव हमारी भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

हरियाली तीज पर महिलाओं ने गाए मंगल गीत

भिवानी। कोंट रोड मिनी बाइपास स्थित दक्षिण काली नवदुर्गा मंदिर में नवदुर्गा सेवा सहयोग संस्था द्वारा हरियाली तीज का पर्व पारंपरिक श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया। मंदिर परिसर में महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों में सजधज कर मंगल गीतों की मधुर प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इस अवसर पर मंदिर प्रबंधक उर्मिला सैनी ने बताया कि महिलाओं के लिए विशेष रूप से झूले, मेहंदी, गीत-संगीत व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की व्यवस्था की। मंदिर में हरियाली और रंगोली की सुंदर सजावट की गई थी। सभी ने माता रानी से सौभाग्य, सुख-समृद्धि व परिवार की मंगलकामना के लिए पूजा-अर्चना की। सैनी ने कहा कि हरियाली तीज महिलाओं के लिए अत्यंत महत्व रखती है, ये पर्व केवल सजने-संवरने का नहीं, बल्कि नारी शक्ति, सौभाग्य, पर्यावरण प्रेम और संस्कृति से जुड़ने का प्रतीक है।

फस्ट स्टेयर प्ले स्कूल में मनाई हरियाली तीज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

भिवानी। समारोह में रंग बिरंगे परिधान में विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

मनुष्य व्यवहार से ही उत्सव प्रिय है और त्योहार मनुष्य के जीवन में खुशियों के रंग भर देते हैं। पारंपरिक त्योहारों को सामूहिक रुप से मनाना अपनी आने वाली पीढ़ियों को अपनी संस्कृति से परिचित करवाना है, ये बात फस्ट स्टेयर प्ले स्कूल स्कूल निदेशक बलराज फौगाट ने तीज उत्सव में बच्चों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि आधुनिक समय में पारंपरिक त्योहारों के प्रति नई पीढ़ी का मोह भंग होता जा रहा है, ऐसे में विद्यालयों में बच्चों के साथ पारंपरिक त्योहार मनाकर उन्हें अपनी अक्षुण्ण संस्कृति के संरक्षण के प्रति जागरुक किया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष तीज का त्योहार श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। तीज का त्योहार उतर भारत में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

पौधरोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

- माता की 34वीं पुण्यतिथि व जॉब एनिवरसरी पर 31 पौधों का रोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। अपनी सरकारी जॉब की नियुक्ति की वर्षगांठ पर पौधारोपित करते हुए।

किसी प्रियजन की पुण्यतिथि या किसी महत्वपूर्ण अवसर जैसे जॉब एनिवर्सरी पर पौधारोपण करना सिर्फ एक रस्म नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का एक गहरा और सार्थक संदेश है। ऐसा ही संदेश श्रीकृष्णा कृपा जीओ गीता समिति के जिला अध्यक्ष नरेश आहुजा ने अपनी माता तारावंती की 34वीं पुण्यतिथि तथा महासचिव कनिष्ठ अभियन्ता बिजेश कुमार जावला ने जनस्वास्थ्य विभाग में नियुक्ति की 18वीं वर्षगांठ पर जनस्वास्थ्य विभाग कैंपस व रोहतक रोड़ पर केंद्रीय विद्यालय पालुवास में संयुक्त रूप से 31 पौधों का रोपण कर दिया। इस दौरान आहुजा व जावला ने पौधारोपण कर पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। इस मौके पर श्रीकृष्णा कृपा जीओ गीता समिति के जिला अध्यक्ष नरेश आहुजा व महासचिव कनिष्ठ अभियंता बिजेश कुमार जावला ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि लगातार बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन हमारे ग्रह के लिए गंभीर खतरा बन गए हैं। ऐसे में पौधारोपण जैसे छोटे-छोटे कदम भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। उन्होंने कहा कि पेड़ ना केवल हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि वे मिट्टी के कटाव को रोकने, भूजल स्तर को बढ़ाने और जैव विविधता को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने बताया कि इस पौधारोपण के माध्यम से यह संदेश दिया कि पर्यावरण की रक्षा हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। ऐसे आयोजन ना केवल पुण्यतिथि और वर्षगांठ जैसे अवसरों को सार्थक बनाते हैं, बल्कि वे भावी पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करने में भी मदद करते हैं। श्रीकृष्णा कृपा जीओ गीता समिति के जिला अध्यक्ष नरेश आहुजा व महासचिव कनिष्ठ अभियंता बिजेश कुमार जावला ने कहा कि वे चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ियां खुली व स्वच्छ हवा में सांस लें।

लिटिल हार्टस में मनाई तीज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

लिटल हार्टस ग्रुप ऑफ स्कूलस के तीजोत्सव की बेला में आज लिटल हार्टस पब्लिक स्कूल, भिवानी के प्रांगण में नौंवी कक्षा के विद्यार्थियों की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें त्यौहारो को प्रकाशित करने वाले विषय प्रमुख थे।

विद्यालय के महासचिव संजय गोयल, एम.डी. पवन गोयल व भावना गोयल ने बताया कि तीज त्यौहार के अवसर पर विद्यालय में नौंवी कक्षा की मेहंदी लगाओ, पोट डेकोरेशन व रंगोली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है जिसमे विद्यार्थियों ने अपनी अदभुत प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए एक से एक बढ़कर रंगोली बनाई व बड़े ही आकर्षक ढंग से मेहंदी लगाई व बहुत सुन्दर ढंग से पोट सजाए व विद्यार्थियों ने रंग-बिरंगी पारंपरिक परिधानो व वेशभुषाओं में पूर्ण उत्साह के साथ नृत्य प्रस्तुत किए। इन गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यालय की निदेशिका ऐश्वर्या सिंघल, निदेशक रामानन्द सिंघल, राहुल गोयल, विनय गोयल, निश्चल गोयल व साक्षी गोयल ने बच्चों के उत्साह की प्रसंशा करते हुए बताया कि स्कूल में इस प्रकार के आयोजन करवाने का उद्देश्य बच्चों के मन में सांस्कृतिक विरासत के प्रति प्रेम जगाना और उन्हें भारत की समृद्ध परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों की झलक प्रदान करना है। इस अवसर पर प्राचार्य दीपक जोशी, उप प्राचार्य मनमोहन चावला, को-ओर्डिनेटर सोनिया खेमका, रश्मि गर्ग, बबीता, सुषमा, पुजा आदि मौजूद रहे।

एचएन मॉडल स्कूल में हरियाली तीज पर्व धूमधाम से मनाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जिला के गांव सांगा स्थित एचएन मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल में हरियाली तीज का पर्व बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे कार्यक्रम की रौनक और भी बढ़ गई। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्राचार्या रजनी खेड़ा ने किया। उन्होंने छात्राओं को हरियाली तीज के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। प्राचार्या खेड़ा ने कहा कि यह त्योहार प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है। उन्होंने छात्राओं को भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इनमें मेहंदी प्रतियोगिता, लोकगीत गायन, समूह नृत्य और रंगोली प्रतियोगिताएं प्रमुख रहीं। छात्राओं ने रंग-बिरंगी वेशभूषा में आकर त्योहार की छटा बिखेर दी। विजेताओं को विद्यालय प्रबंधन द्वारा पुरस्कृत किया गया। विद्यालय स्टाफ और छात्राओं ने मिलकर इस पर्व को एक यादगार अवसर बना दिया। हरियाली तीज के इस आयोजन से छात्राओं को न केवल सांस्कृतिक विरासत से जुडऩे का मौका मिला, बल्कि उनमें आपसी सौहार्द और सहयोग की भावना भी मजबूत हुई।

सीईटी अभ्यर्थियों के लिए लगाई छब्बील

भिवानी। भारतीय प्रजापति हीरोज ऑर्गेनाइजेशन (बीपीएचओ) की भिवानी टीम ने सीईटी के अभ्यर्थियों के लिए एक सराहनीय पहल की। बीपीएचओ की भिवानी टीम ने सह संस्थापक रमेश टांक व नगर परिषद के पूर्व चेयरमैन मामनचंद प्रजापित की अगुवाई में परीक्षा देने आए छात्र-छात्राओं को स्थानीय दिनोद गेट पर नि:शुल्क जलपान सेवा उपलब्ध करवाई। बीपीएचओ के सदस्यों ने पानी के साथ-साथ अन्य जलपान सामग्री भी वितरित की, जिससे परीक्षा के तनावपूर्ण माहौल में अभ्यर्थियों को कुछ राहत मिल सके।

कारगिल दिवस पर पूर्व सैनिकों को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- शहीदों की बहादुरी, त्याग और बलिदान को याद करने का दिन है कारगिल विजय दिवस : श्रीभगवान

विजय कारगिल दिवस के उपलक्ष्य में हरियाणा राज्य भारत स्काउट गाइड की शाखा चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप द्वारा चलाए गए एक पौधा शहीद के नाम पखवाड़े का शनिवार को समापन हो गया। ग्रुप के स्थानीय जिला के कार्यालय एवं प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित समापन अवसर पर कारगिल शहीदों को नमन कर पूर्व सैनिकों को किया गया सम्मानित किया गया। चंद्रशेखर आजाद ओपन गुरप के ग्रुप कोर्डिनेटर लक्ष्मण गौड के निर्देशानुसार आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यअतिथि जिला आयुक्त (स्काउट्स) श्रीभगवान ने शिरकत की तथा अध्यक्षता चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप के ग्रुप लीडर सागर सज्जन सिंह ने की तथा मंच का संचालन सह ग्रुप लीडर अमित कुमार व महावीर जैन सीनियर सैकेंडरी स्कूल की प्राचार्या एवं गाइड रेंजर कैप्टन पुष्पा देवी ने किया। यह जानकारी देते हुए ग्रुप लीडर सागर सज्जन सिंह ने बताया कि कार्यक्रम में पहुंचने पर मुख्यअतिथि जिला आयुक्त (स्काउट्स) श्रीभगवान का सम्मान गार्ड के रूप में सीनियर रोवर नितेश कुमार ने सलामी देकर स्वागत किया तथा बैंड द्वारा विजय अहीरवाल ने सलामी दी। इस दौरान 65 रोवर व रेंजर्स शामिल रहे। इस मौके पर जिला आयुक्त (स्काउट्स) श्रीभगवान ने कहा कि कारगिल विजय दिवस हर साल 26 जुलाई को भारत में मनाया जाता है। यह दिन 1999 के कारगिल युद्ध में भारत की जीत और देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले बहादुर सैनिकों के सम्मान का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यह दिन उन वीर सपूतों को श्रद्धांजलि देने का अवसर है, जिन्होंने देश की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। कारगिल युद्ध में भारत के 527 से अधिक सैनिक शहीद हुए थे।

शहीदों के नाम पर लगाए पौधे

इस मौके पर चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप के ग्रुप लीडर सागर सज्जन सिंह ने कहा कि कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में ग्रुप द्वारा एक पौधा शहीद के नाम अभियान पखवाड़े का आयोजन किया गया था, जिसके तहत विभिन्न स्थानों पर शहीदों के नाम से पौधारोपण किया गया, ताकि लोगों को शहीदों की वीरगाथा व पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया जा सकें। उन्होंने कहा कि कारगिल विजय दिवस सिर्फ एक सैन्य जीत का जश्न नहीं है, बल्कि यह हौसले, देशभक्ति और बलिदान का एक पर्व है, जो हमें उन वीर सैनिकों की याद दिलाता है जिन्होंने देश के सम्मान की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस अवसर पर गिरीश खेमका, नूर ज्वैलर्स के संस्थापक रिंकू, नितेश कुमार, ध्रुव अग्रवाल, विजय अग्रवाल, विवेक, पार्थ अग्रवाल, हर्षित, मयूर, आरीफ, अली, विनय, भविष्य कौशिक आदि मौजूद रहे।

महापुरुषों की जयंती की तर्ज पर शहीदों के सम्मान में हो कार्यक्रमः महेश

हरियाणा एनसीसी बटालियन ने शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित कर शहीदों को किया नमन

- भारतीय सैनिकों की विजय का प्रतीक है कारगिल विजय दिवस : नेत्रपाल तंवर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित करते शहीदों को नमन करते अतिथि, पूर्व सैनिक व कैडेट्स।

नेहरू पार्क स्थित शहीद स्मारक पर 11 हरियाणा एनसीसी बटालियन द्वारा कारगिल विजय दिवस पर शनिवार को शहीदों के सम्मान में कार्यक्रम का आयोजन किया। इस मौके पर बतौर मुख्यतिथि पुलिस अधीक्षक मनबीर सिंह ने शिरकत की और पुष्प अर्पित कर अमर शहीद वीर बलिदानियों को श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम के दौरान हमारा अपना फाउंडेशन ने एक दीया शहीदों के नाम जलाकर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर 11 हरियाणा एनसीसी बटालियन से एनसीसी कैडेट्स के साथ-साथ पूर्व सैनिक संघ के जिला अध्यक्ष सुरेंद्र कौशिक की अध्यक्षता में भारी संख्या में पूर्व सैनिक शामिल हुए।

राज्य स्तरीय कार्यक्रम जल्द शुरू होंगे

शहीद परिवार ने हरियाणा सरकार से अपील की कि जिस प्रकार से भाजपा सरकार द्वारा महापुरुषों की जयंती पर प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है, उसी प्रकार अमर शहीदों की याद में भी प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि शहीदों व उनके आश्रितों को सम्मान मिलने के साथ-साथ युवा पीढ़ी को उनके बारे में जानने का अवसर मिल पाए। फाउंडेशन के अध्यक्ष महेश चौहान व राष्ट्रीय सम्मान ट्रस्ट के अध्यक्ष नेत्रपाल तवर ने कहा कि शहीदों के सम्मान में कार्यक्रम राज्य सरकार को समय-समय पर करते रहना चाहिए, ताकि युवाओं में नया जोश लाया जा सके। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार समय-समय पर महापुरुषों की जयंती का कार्यक्रम कर एक नया आयाम स्थापित कर रही है और हमें पूर्ण विश्वास हैं कि शहीदों के नाम से राज्य स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए जाने की शुरूआत जल्द की जाएगी।

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में तीज पर्व उल्लास के साथ मनाया

- बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिनमें विभिन्न प्रकार की सुंदर झांकियां, तीज से संबंधित गीत एवं पारंपरिक नृत्य प्रमुख रहे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

भिवानी। मिलकपुर के आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में तीज उत्सव बड़े हर्षोल्लास और सांस्कृतिक धूमधाम के साथ मनाते हुए।

मिलकपुर के आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में तीज उत्सव बड़े हर्षोल्लास और सांस्कृतिक धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय प्रांगण में बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिनमें विभिन्न प्रकार की सुंदर झांकियां, तीज से संबंधित गीत एवं पारंपरिक नृत्य प्रमुख रहे। बच्चों की प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। विद्यालय के अध्यापकों व अध्यापिकाओं ने भी इस अवसर पर भागीदारी निभाते हुए बच्चों का उत्साहवर्धन किया। स्कूल के प्राचार्य नीतीश मिश्र ने तीज के महत्व पर प्रकाश डालते हुए भगवान शिव और माता पार्वती की कथा को विस्तारपूर्वक बताया, जिससे बच्चों को इस पर्व की सांस्कृतिक और धार्मिक गहराई को समझने का अवसर मिला। इसी दिन विद्यालय में कारगिल विजय दिवस भी श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। प्राचार्य नीतीश मिश्र ने कारगिल युद्ध की वीरगाथा बच्चों को सुनाई और देश के शहीदों को याद करते हुए उन्हें नमन किया। उन्होंने बच्चों को देशभक्ति और बलिदान की भावना से ओतप्रोत होकर जीवन जीने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम में विद्यालय का समस्त स्टाफ, प्राथमिक प्रभारी श्रीमती प्रोमिला यादव सहित सभी शिक्षक गण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन देशभक्ति गीतों और तिरंगे को नमन के साथ किया गया।

खबर संक्षेप

तीन दिवसीय पाठ्यक्रम कार्यशाला भिवानी डाइट में

भिवानी। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भिवानी में जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सुभाष भारद्वाज एवं कार्यवाही प्राचार्य डाइट भिवानी मोनिका के निर्देशन में जिला भिवानी के साइंस मैथमेटिक्स एवं सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों के लिए कक्षा छठी के लिए नवनिर्मित पाठ्य पुस्तक की तीन दिवसीय कार्यशाला का गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल लोहड़ भिवानी में आयोजित किया गया।

वेंडरों की समस्याओं से करवाएंगे अवगत: मंजीत

भिवानी। स्टाम्प वेन्डर एसोसिएशन के राज्य उपप्रधान मन्जीत लौरा ने भिवानी में जिला स्तरीय बैठक ली। बैठक में जिले के सभी स्टाम्प वैन्डरों से उन्होंने मुलाकात की तथा उनकी समस्याएं सुनीं। मन्जीत लौरा का भिवानी पहुंचने पर सभी स्टाम्प वैन्डरों ने स्वागत किया। सभी स्टाम्प वेंडरों से मुलाकात करने के बाद उनको समय-समय पर आने वाली तकलीफों पर विचार सांझा किए।

शिविर में 44 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

चरखी दादरी। रक्तवीर परिवार और आरोग्यम हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर में 44 युवाओं ने रक्तदान किया। शिविर विशेष रूप से डॉक्टर जयंत यादव और देवन के जन्मदिन के उपलक्ष्य में आयोजित किया। कार्यक्रम में समाजसेवी कपूर यादव ने बतौर मुख्यतिथि शिरकत की और रक्तदाताओं का उत्साह वर्धन किया।

पशु अस्पताल में रोपित की त्रिवेणी

भिवानी। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं हरियाली बढ़ाने के उद्देश्य से भिवानी पुलिस लाइन के सामने स्थित पशु अस्पताल में त्रिवेणी रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम पशुपालन एवं डेयरिंग विभाग के उपनिदेशक डॉ. रविंद्र सहरावत के निर्देशानुसार आयोजित किया, जिसमें पर्यावरण प्रहरी लोकराम नेहरा के नेतृत्व में कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस मौके पर पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ. रविंद्र ने कहा कि पशुपालन विभाग केवल पशु स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि पर्यावरण के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी समझता है।

युवा पीढ़ी को जड़ों से जोड़े रखने का सफल प्रयास था सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता: सर्राफ

बच्चों में छिपी प्रतिभा को निखारने का अवसर देते हैं सांस्कृतिक कार्यक्रम

तीन दिवसीय तीज मेला महोत्सव के दूसरे दिन एक विशेष ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ।

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

मातृ शक्ति के सम्मान में युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट द्वारा हनुमान ढ़ाणी स्थित हनुमान जोहड़ी मंदिर धाम में आयोजित करवाए जा रहे तीन दिवसीय तीज मेला महोत्सव के दूसरे दिन शनिवार को एक विशेष ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ। इस दौरान युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट एवं प्राईवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित जिला स्तरीय अंतर विद्यालय समूह नृत्य प्रतियोगिता ने मेले की रौनक को दोगुना कर दिया। यह जानकारी देते हुए पुजारी ध्यानदास महाराज व प्राईवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा के प्रधान रामअवतार शर्मा ने बताया कि इस प्रतियोगिता में जिला भर के विभिन्न विद्यालयों से आए प्रतिभावान विद्यार्थियों ने अपनी अद्भुत नृत्य कला का प्रदर्शन कर उपस्थित जनसमूह का मन मोह लिया। उन्होंने बताया कि बालयोगी महंत चरणदास महाराज के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यअतिथि भिवानी के विधायक घनश्याम सर्राफ, हरियाणा अनुसूचित जाति आयोग के वाईस चेयरमैन विजेंद्र बडगूजर ने शिरकत की तथा विशिष्ट अतिथि के तौर पर अनाज मंडी से अमित गोयल व डा. एडविन पहुंचे। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न स्कूलों से आए विद्यार्थियों ने भारतीय संस्कृति और लोककला की छटा बिखेरते हुए शानदार प्रस्तुतियां दीं। पारंपरिक हरियाणवी नृत्यों से लेकर आधुनिक फ्यूजन तक, हर प्रस्तुति में बच्चों की कड़ी मेहनत, रचनात्मकता और ऊर्जा साफ झलक रही थी। ना केवल नृत्य शैलियों में विविधता थी, बल्कि परिधानों और संगीत के चयन में भी हर टीम ने अपनी अनूठी पहचान बनाई। वहीं दर्शकों ने भी तालियों और उत्साहवर्धन से बच्चों का भरपूर साथ दिया। इस मौके पर बालयोगी महंत चरणदास ने कहा कि आधुनिकता की दौड़ में तीज जैसे पर्वों की महत्ता कहीं गुम सी होती जा रही है। ऐसे में लोगों को पर्वों की महत्ता याद दिलाने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम काफी कारगर सिद्ध होते है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जन को चाहिए कि वे तीज जैसे पर्वों पर आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग ले तथा अपनी संस्कृति से रूबरू हो।

भिवानी। प्रतिभाओं के साथ विधायक घनश्याम सर्राफ व अन्य। *फोटो: हरिभूमि*

बच्चों की मनमोहक प्रस्तुति

इस मौके पर मुख्यअतिथि विधायक घनश्याम सर्राफ व हरियाणा अनुसूचित जाति आयोग के वाईस चेयरमैन विजेंद्र बडगूजर ने कहा कि कहा कि ऐसे आयोजनों से बच्चों में छिपी प्रतिभा को निखारने का अवसर मिलता है और उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत होती है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के दौरान बच्चों की प्रतिभा और उत्साह ने यह साबित कर दिया कि हरियाणा में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है और उचित मार्गदर्शन मिलने पर वे किसी भी क्षेत्र में अपना परचम लहरा सकते हैं। इस मौके पर प्राईवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन हरियाणा के प्रधान रामअवतार शर्मा ने बताया कि तीन दिवसीय तीज मेला महोत्सव के दूसरे दिन बच्चों ने सिर्फ अपनी नृत्य क्षमता ही नहीं दिखाई, बल्कि मंच पर उनकी आत्मविश्वास और टीम भावना भी देखने लायक थी। यह प्रतियोगिता केवल एक कला प्रदर्शन नहीं थी, बल्कि यह युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़े रखने और उन्हें मंच प्रदान करने का एक सफल प्रयास भी था।

बाढड़ा। बाढड़ा में अनाज मंडी के सामने धरने पर बैठे किसान। *फोटो: हरिभूमि*

किसान सभा का धरना जारी सरकार के खिलाफ भरी हुंकार

■ किसानों ने सरकार पर बिना मांगे मंजूर किए बरगलाने का आरोप

हरिभूमि न्यूज ⏭ बाढड़ा

बाढड़ा में अनाज मंडी में किसान सभा का धरना शनिवार को दूसरे दिन भी जारी रहा। किसानों ने सरकार पर बिना मांगे मंजूर किए बरगलाने का आरोप लगाया। किसान सभा अध्यक्ष रघबीर श्योराण काकड़ौली की अध्यक्षता में आयोजित धरने को संबोधित करते हुए वरिष्ठ किसान नेता राजकुमार हड़ौदी ने कहा कि सरकार किसान व कृषि को बर्बाद करना चाहती है। आज देश भर में पूंजीपति व्यवस्था हावी हो रही है और आम आदमी और किसान का शोषण आम बात हो गई है।

बड़ी बड़ी कंपनियों भोलेभाले किसानों के फसल बीमा के नाम पर भारीभरकम प्रीमियम वसूल कर रही हैं और प्राकृतिक आपदा होने पर मुंह मोड़ रही है। सरकार व कृषि विभाग के बड़े बड़े अधिकारी मिलीभगत कर किसान को उसका वाजिब हक देने से पीछे हट रहे हैं जो न्यायसंगत नहीं है। सीएम नायब सिंह सैनी ने किसानों के साथ केवल दिखावे की वार्ता तो की लेकिन अब उन मांगों को कब पूरा करेंगे इसको लेकर समय सीमा निश्चित नहीं की है, जिससे हालात खराब हो गए हैं और मजबूरन किसानों को धरना प्रदर्शन आरंभ करना पड़ा। धरने को राज्य उपाध्यक्ष भूपसिंह कारी धारणी, एमएसपी यूनियन से ब्रह्मपाल, सीटू के नेता सुमेर सिंह, रिटायर्ड कर्मचारी यूनियन के हवासिंह हंसावास खुर्द ने भी संबोधित कर सरकार को खामियां उजागर कीं। किसान सभा के संयुक्त सचिव डा. बलबीर सिंह ने प्रशासन से दो स्तर की बातचीत व 24 जुलाई को मुख्यमंत्री से किसान संगठनों से हुई बातचीत का ब्यौरा रखा।

उन्होंने खरीफ 2023 कपास बीमा क्लेम में भिवानी व दादरी जिलों के 350 करोड़ रुपयों के घोटाले की जांच की मांग तथा बीमा क्लेम ब्याज सहित जारी करने बाबत मुख्यमंत्री ने कोई समयबद्ध आश्वासन नहीं दिया।

भाजपाइयों ने कारगिल विजय दिवस पर घरों पर फहराया राष्ट्रीय ध्वज

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

कारगिल विजय दिवस पर हर देशवासी शौर्य एवं राष्ट्र के लिए समर्पण की प्रेरणादायक गाथा को स्मरण कर रहा है। भाजपाइयों ने उन सभी शूरवीरों को श्रद्धासुमन अर्पित किए, जिन्होंने कारगिल की चोटियों से तिरंगे को उतारने के षडयंत्र को असफल किया तथा कारगिल विजय दिवस पर घरों पर राष्ट्रीय ध्वज लगाए। इस अवसर पर पूर्व प्रदेश सह मीडिया प्रमुख रीतिक वधवा ने देश के लिए प्राण न्योछावर करने वाले वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज का दिन भारत के महान वीर सपूतों को याद करने का दिन है।

भिवानी। तिरंगा लहराते रीतिक वधवा व अन्य। *फोटो: हरिभूमि*

उन्होंने कहा कि इस दिन भारत ने ऑपरेशन विजय को पूर्ण करते हुए पाकिस्तान को धूल चटाकर दुनिया को हैरान कर दिया था। हम भारत के उन वीर सपूतों को नमन करते हैं, ये दिन भारत की सेना के शौर्य का भी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि कारगिल युद्ध पाकिस्तान ने भारत पर थोपा था, जिसका हमारे वीर जवानों ने मुंहतोड़ जवाब दिया। उन्होंने कहा कि कारगिल एक चुनौतीपूर्ण जगह थी, जहां का तापमान माइनस 50 डिग्री होता है। इस बेहद चुनौतीपूर्ण हालात में भी हमारे जवानों ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए पाकिस्तान के कायरों को धूल चटा दी। उस समय पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ अमेरिका गए और भारत पर दबाव डालने की कोशिश की, जिसपर तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि अमेरिका हो या दुनिया की कोई भी ताकत हो, भारत किसी के सामने नहीं झुकेगा।

विजय स्तंभ पर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित

■ कारगिल विजय दिवस: देशभक्ति, एकता और शौर्य को समर्पित समारोह

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

देश के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने और राष्ट्रीय एकता को मजबूती देने के उद्देश्य से नेताजी सुभाष चंद्र बोस युवा जागृत सेवा समिति एवं सदाचार शिक्षा समिति द्वारा नेहरू पार्क स्थित विजय स्तंभ पर कारगिल विजय दिवस श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर दोनों संस्थाओं के स्वयंसेवियों, गणमान्य व्यक्तियों व युवाओं ने तिरंगा फहराकर, पुष्पांजलि अर्पित कर और दो मिनट का मौन रखकर कारगिल युद्ध में शहीद हुए भारत माता के वीर सपूतों को नमन किया। कार्यक्रम के संयोजक राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता समाजसेवी अशोक कुमार भारद्वाज ने कहा कि कारगिल विजय दिवस महज एक सैन्य उपलब्धि नहीं, बल्कि भारत की एकता, अखंडता, शौर्य और संकल्प का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि देशभक्ति केवल सीमा पर लड़ने तक सीमित नहीं होती, बल्कि नागरिक जीवन में अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन भी राष्ट्रसेवा का ही एक रूप है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे अपने जीवन में अनुशासन, चरित्र और परिश्रम को अपनाकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

भिवानी। विजय स्तम्भ पर पुष्प अर्पित करते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

मौजूद रहे

समारोह के दौरान वक्ताओं ने यह भी कहा कि कारगिल युद्ध ने पूरे देश को एकजुट कर दिया था और आज की पीढ़ी को इस युद्ध से प्रेरणा लेकर देश के लिए समर्पित भाव से कार्य करना चाहिए। कार्यक्रम में उपस्थित सभी नागरिकों ने यह संकल्प लिया कि वे देश की अखंडता, संप्रभुता और भाईचारे की भावना को हर परिस्थिति में बनाए रखेंगे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक, युवा छात्र, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षक एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

भाजपा की जिला कार्यकारिणी घोषित

भिवानी। भारतीय जनता पार्टी के जिला संगठन को और अधिक मजबूत बनाने तथा भाजपा की जनकल्याणकारी नीतियों को तेजी व मजबूती से प्रत्येक जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से भाजपा जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल कौशिक, संगठन महामंत्री फणनिंद्र नाथ शर्मा, प्रदेश महामंत्री कृष्ण बेदी, जिला प्रभारी रेणु डाबला से विचार-विमर्श करके जिला कार्यकारिणी की नियुक्तियां की है। यह जानकारी देते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने बताया कि नई जिला कार्यकारिणी में 55 जिला कार्यकारिणी सदस्य और 18 विशेष आमंत्रित सदस्य सहित 73 सदस्यों को जिला कार्यकारिणी में स्थान मिला है। उन्होंने बताया कि इस नई कार्यकारिणी का मुख्य लक्ष्य भिवानी जिला में पार्टी की पकड़ को और मजबूत करना है। जिलाध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक ने बताया कि नई टीम जमीनी स्तर पर कार्य करेगी और यह सुनिश्चित करेगी कि पार्टी का संदेश हर घर तक पहुंचे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8295157800, 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

न्यू हाउसिंग बोर्ड में कारगिल विजय दिवस मनाया गया

भिवानी। को मेरे युवा भारत (माय भारत) के जिला युवा अधिकारी नित्यानंद , लेखा एवं कार्यक्रम सहायक जितेंद्र सैनी के तत्वावधान में हेमंत सैनी कल्चरल थिएटर एंड वेलफेयर सोसाइटी के बच्चों द्वारा न्यू हाउसिंग बोर्ड में कारगिल विजय दिवस मनाया। जिसमें रितु कथुरिया चौधरी द्वारा शहीदों के समक्ष दीप प्रज्वल किया और उनको नमन किया तथा प्रियंका ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए मानसी ने बताया कि 14 जुलाई को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वायजेयी ने घुसपैठियों के खिलाफ चले ऑपरेशन विजय की सफलता का ऐलान किया था। 26 जुलाई को आधिकारिक तौर पर कारगिल युद्ध की समाप्ति हुई थी।

मांगों को लेकर किसानों ने शहर में निकाला विरोध मार्च

हरिभूमि न्यूज ⏭ लोहारू

फसल बीमा क्लेम भुगतान को लेकर संघर्ष कर रहे किसानों ने अपने अनिश्चितकालीन महापड़ाव के 11वें दिन लोहारू में विरोध मार्च निकाला और सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इससे पहले धरना स्थल पर होशियार सिंह, रोहताश, अमर सिंह फरटिया और माईराम की अध्यक्षता में किसानों ने धरना दिया। वहीं मंच का संचालन मा. जगरोशन, धर्मपाल बारवास व पृथ्वी सिंह गोठड़ा ने किया। अखिल भारतीय किसान सभा के जिला अध्यक्ष रामफल देशवाल ने कहा कि किसानों की बीमा क्लेम राशि भुगतान करने की मांग को पूरा करने में सरकार को देरी नहीं करनी चाहिए। शनिवार को धरने को नीलम देवी खरकड़ी, बलवीर बि_न, कामरेड विनोद जांगड़ा, मास्टर उमराव सिंह, सुरेश फरटिया, कर्ण सिंह जैनावास, नरेश पहाड़ी, मा. मनोहर लाल शर्मा, ओमप्रकाश दलाल, संजय सिट्टू, ईश्वर सिंह कोंट आदि ने संबोधित किया। धरने पर भतेरी देवी, बिमला देवी, बाला, चमेली, राजबाला, दर्शना, गिरदावरी, ओमकौर, मायापति, इंद्राज दमकोरा आदि शामिल रहे।

लोहारू। कस्बे में विरोध प्रदर्शन करते किसान। *फोटो: हरिभूमि*

चंडीगढ़ सीएम आवास पर पहुंची बीडीसी वाइस चेयरपर्सन प्रोमिला

बहल। चंडीगढ़ में सीएम आवास पर हरियाली तीज उत्सव में बहल ब्लॉक पंचायत समिति की वाइस चेयरमैन प्रोमिला मान सुधीवास को विशेष आमंत्रण दिया। मुख्यमंत्री ने प्रोमिला मान को उनके द्वारा पार्टी हित में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की व कहा कि तीज उत्सव में महिला शक्ति के बीच पाकर वे अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। संत कबीर कुटीर चंडीगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, उनकी धर्मपत्नी सुमन सैनी के अलावा भाजपा की वरिष्ठ महिला नेत्रियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। प्रोमिला ने बताया कि हरियाली तीज के पारंपरिक रंगों से सजा कार्यक्रम अत्यंत उत्साहजनक रहा और उन्हें मुख्यमंत्री से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों में भागीदारी से समाज में महिलाओं और परंपराओं का सम्मान और भी सुदृढ़ होता है। उन्होंने कहा कि भाजपा सही मायने में महिला सशक्तिकरण के लिए काम कर रही है, जिससे महिलाओं का सम्मान बढ़ा है।

विजय दिवस पर चश्मदीद गवाहों ने अनुभव किए सांझा

शहीदों को पुष्प अर्पित कर नमन किया गया

■ भूतपूर्व कष्ट निवारण समिति के बैनर तले मनाया कारगिल विजय दिवस

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहल

कारगिल युद्ध के 26 साल पूरा होने पर क्षेत्र के सैनिकों ने भूतपूर्व कष्ट निवारण समिति के बैनर तले कारगिल विजय दिवस मनाया। कार्यक्रम में विभिन्न युद्धों में जान गंवाने वाले शहीदों की वीरांगनाओं को सम्मानित किया गया व शहीदों को पुष्प अर्पित कर नमन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि कारगिल में जिन योद्धाओं ने अपना अदम्य साहस दिखाया था, देश हमेशा उनका ऋणी रहेगा। शनिवार को राजगढ रोड पर स्थित दी इंपायर स्विमिंग पूल में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व कर्नल ब्रह्मसिंह श्योराण बिधनोई ने की। उन्होंने कहा कि देश की शरहद पर तैनात एक सैनिक के लिए उसकी मातृभूमि सर्वोपरि होती है और उसके लिए बलिदान देने के लिए वह हमेशा तैयार रहता है। ऐसे रणबाकुंरों की बदौलत हम एक आजाद देश के नागरिक है। उन्होंने कहा कि कारगिल युद्ध मई से जुलाई 1999 तक लड़ा गया था।

बहल। आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते एक वक्ता। *फोटो: हरिभूमि*

चार शहीद वीरांगनाओं को सम्मानित किया गया

कार्यक्रम में चार शहीद वीरांगनाओं को सम्मानित किया गया और उन शहीदों के शौर्य के बारे में बताया गया। समिति अध्यक्ष सूबेदार मेवासिंह सुरपुरा ने कहा कि बहल में जो शहीद स्मारक निर्माणाधीन है, उसमें सभी सैनिक अपना योगदान दें। सरपंच साधूराम पनिहार ने कहा कि शहीदों के सम्मान में बनने वाले स्मारक में ग्राम पंचायत हरसंभव सहयोग देगी। इस अवसर पर कर्नल ब्रह्मसिंह बिधनोई, बीडीसी वाइस चेयरमैन प्रमिला मान सुधीवास, सूबेदार रामकरण, सूबेदार मेवासिंह, सूबेदार मांगेराम, सूबेदार मेजर फतेसिंह, एसएम चंदन सिंह, एसएम सूबेसिंह पाजू, कै. मंदरूप सेरला, एसएम रामकिशन चैहड़, हवलदार रोहताश, हवलदार मानसिंह सिधनवा, कै. महावीर हरियावास आदि मौजूद रहे।

जीवन एवं योग को जानने का श्रेष्ठ साधन है भगवत गीता: गजानंद

बवानीखेड़ा। भगवत गीता का नियमित स्वाध्याय करना हमारे जीवन को एक नई ऊर्जावान दिशा की ओर ले जाने में सहायक है तो है ही बल्कि भगवत गीता हमें नियमित योग मर्यादा अनुशासन और सत्य असत्य में अंतर भी स्पष्ट से समझने में सहायता करती है। आयुष विभाग के आयुष योग सहायक गजानंद कौशिक ने भगवत गीता के बहुमूल्य ज्ञान को व्यायामशाला सज्जनपुर के प्रांगण में उपस्थित बच्चों को गीता के श्लोकों का उच्चारण करवाया एवं सदैव भगवत गीता के अनुसार सत्य और निष्ठा के मार्ग पर अडिग रहने का संकल्प दिलाया। इस अवसर पर नन्हे मुंहे बच्चों ने सबसे पहले योग अभ्यास किया पुनः गीता के श्लोक सुनकर उन्हें कंठस्थ कर अपने गुरुजनों को सुनाकर शाबाशी बटोरकर इनाम प्राप्त किए।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 27 जुलाई 2025

बुलेट ट्रेन के बाद अब आ रहा
हाइएस्ट स्पीड वाला बुलेट इंटरनेट

करीब साठ साल पहले दुनिया की पहली बुलेट ट्रेन बनाने वाले देश जापान ने अब बुलेट स्पीड वाले इंटरनेट को बनाने में सफलता हासिल की है। इस नई तकनीक से अविश्वसनीय तेज गति से डाटा ट्रांसफर हो सकेगा। इस नई तकनीक की क्या हैं विशेषताएं, इससे क्या होंगे भविष्य में फायदे, इनके बारे में आप भी डिटेल में जरूर जानना चाहेंगे।

{ कवर स्टोरी/ सुनील कुमार महला }

हाल ही में जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशंस टेक्नोलॉजी (एनआईसीटी) के रिसर्चर्स ने 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड की अविश्वसनीय इंटरनेट स्पीड हासिल करके विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। जापान के एनआईसीटी ने सुमितोमो इलेक्ट्रिक और यूरोपीय पार्टनर के साथ मिलकर यह उपलब्धि हासिल की है। उनके यूनिक 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर केबल ने अविश्वसनीय स्पीड से डाटा ट्रांसमिट किया।

अविश्वसनीय है इसकी स्पीड

एक रिपोर्ट के अनुसार, नई तकनीक के द्वारा 1.02 मिलियन गीगाबाइट (जीबी) डाटा एक सेकेंड में डाउनलोड किया गया। यह स्पीड इतनी ज्यादा है कि इसके बारे में सोच पाना भी मुश्किल है। जापान की इस तकनीक को वैश्विक रूप से डाटा ट्रांसफर, स्ट्रीमिंग और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में एक उज्ज्वल भविष्य के रूप में देखा जा रहा है। बताते चलें कि जापान की इस लेटेस्ट इंटरनेट नेटवर्क की स्पीड 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह करीब 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के बराबर है। यह इंटरनेट स्पीड इतनी फास्ट है कि इस स्पीड का इस्तेमाल करके कुछ ही सेकेंड्स में फिल्म ही नहीं, बल्कि पूरी की पूरी लाइब्रेरी तक डाउनलोड की जा सकती है। वास्तव में जापान की यह उपलब्धि डेटा ट्रांसमिशन तकनीक में एक महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम है। जापान की यह स्पीड अमेरिका की वर्तमान इंटरनेट डाटा एवरेज इंटरनेट स्पीड से 3.5 मिलियन गुना अधिक है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह स्पीड अमेरिका के औसत इंटरनेट कनेक्शन से 35 लाख गुना ज्यादा है। भारत की औसत इंटरनेट गति से यह 1.6 करोड़ गुना तेज बताई जा रही है। रिसर्चर्स के अनुसार इतनी स्पीड से एक साथ 1 करोड़ 8 हजार वीडियो स्ट्रीम किए जा सकते हैं। यानी 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के हिसाब से यह स्पीड मिलेगी, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। जापान द्वारा हाइ स्पीड इंटरनेट तकनीक का विकास, आने वाले समय में 6जी नेटवर्क, क्लाउड सिस्टम्स, अंडरसी डेटा केबल्स और एआई जैसे उभरते क्षेत्रों में नई क्रांति लेकर आएगा।

नई तकनीक का किया इस्तेमाल

जापान ने सिंगल कोर के बजाय 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर सिस्टम और उन्नत एंप्लीफायर तकनीक की मदद से इतनी तेज इंटरनेट स्पीड को हासिल करने में सफलता हासिल की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन स्पेशल केबल का इस्तेमाल कर शोधकर्ताओं की टीम ने बिना किसी स्पीड लॉस के 1800 किलोमीटर से भी अधिक की दूरी तक भारी मात्रा में डेटा भेजने में सफलता पाई। उन्होंने ट्रांसमीटर, रिसीवर और लूपिंग सर्किट के सेटअप का उपयोग किया, जिससे डेटा फुल पॉवर से फ्लो रखने में मदद मिली। इस ऐतिहासिक उपलब्धि का अर्थ है कि एक सेकेंड में 10,000 से अधिक फिल्में डाउनलोड की जा सकती हैं। गौरतलब है कि मार्च 2024 में भी जापान ने ही 402 टेराबिट्स प्रति सेकेंड (यानी 50,250 जीबीपीएस) की स्पीड का रिकॉर्ड बनाया था। लेकिन इस बार नई तकनीक ने इस आंकड़े को दोगुना से अधिक कर दिया।

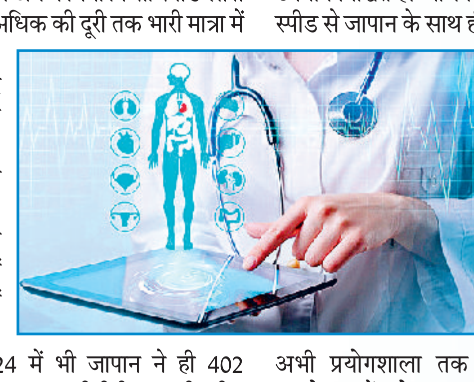

कई सेक्टर्स को मिलेगा लाभ

कहना गलत नहीं होगा कि जैसे-जैसे एआइ, 8के स्ट्रीमिंग, क्लाउड गेमिंग और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसे सेक्टर आगे बढ़ेंगे, ऐसे ब्रेकथ्रू तकनीकों की जरूरत और भी बढ़ेगी। वास्तव में यह तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, एआइ, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, आइओटी और ग्लोबल डिजिटलीकरण की बढ़ती मांगों को पूरा करने में मदद करेगी। ज्यादा तेज इंटरनेट, ज्यादा तेज विकास भी लेकर आएगा। स्मार्ट सिटी, रिमोट हेल्थ केयर और ऑनलाइन शिक्षा जैसे क्षेत्रों में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

जापान ने सिद्ध की श्रेष्ठता

बताते चलें कि दुबई, इंटरनेट की स्पीड के मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर, हॉन्ग कॉन्ग तीसरे नंबर पर, फ्रांस चौथे नंबर पर और आइसलैंड पांचवें नंबर पर आता है। कहना गलत नहीं होगा कि जापान ने अपने तकनीकी नवाचार से ग्लोबल डिजिटल डिफरेंस को भी उजागर किया है। आज एआइ का दौर है। दुनिया में ज्यादातर काम-काज इंटरनेट तकनीक से किए जा रहे हैं। आने वाले समय में इंटरनेट और तकनीक का उपयोग निश्चित ही अधिक बढ़ेगा। ऐसे में जापान की इंटरनेट स्पीड से जापान के साथ ही साथ दुनिया के अन्य देशों को भी इसके लाभ मिल सकेंगे। आने वाले समय में एआई, 6जी नेटवर्क, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी उभरती तकनीकों के लिए अत्यधिक डाटा ट्रांसमिशन की जरूरत होगी। जापान की यह तकनीक इन जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हालांकि यह तकनीक अभी प्रयोगशाला तक ही सीमित है और इसे आम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाने में वक्त लगेगा। लेकिन भविष्य की इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिहाज से यह एक मजबूत नींव तो रखती ही है।

हमें भी करने होंगे प्रयास

जापान की यह उपलब्धि हमें भी अपनी इंटरनेट गति को बढ़ाने की जरूरत की याद दिलाती है। गौरतलब है कि इंटरनेट की स्पीड के मामले में भारत टॉप 10 देशों में भी शामिल नहीं है। यहां पर मोबाइल इंटरनेट स्पीड 100.78 एमबीपीएस है, जबकि एवरेज ब्रॉडबैंड स्पीड 63.55 एमबीपीएस है। वास्तव में यह स्पीड विश्व के बाकी देशों के मुकाबले काफी कम है। आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उतनी इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है, जितनी होनी चाहिए। आज भी भारतीय ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी और 5जी नेटवर्क का विस्तार काफी चुनौतियों से भरा है। आज भारत लगातार डिजिटाइजेशन की ओर बढ़ रहा है। इंटरनेट ही शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक विकास के लिए नए अवसर खोल सकता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने से अनेक प्रकार के अवसर देश में पैदा होंगे। इंटरनेट स्पीड बढ़ेगी तो डिजिटल इंडिया को गति मिलेगी और डिजिटल इंडिया से रोजगार के अवसर बढ़ने, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने और बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण होगा। इसके लिए आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाएं। *

यंगस्टर्स को सर्वाधिक अट्रैक्ट करते हैं
देश के टॉप करियर मैगनेट सिटीज

प्राइवेट सेक्टर में अगर देश के टॉप करियर मैग्नेट सिटीज की बात करें तो बेंगलुरु, हैदराबाद और चेन्नई सबसे आगे हैं। इनके अलावा कुछ और शहर भी आगे बढ़ रहे हैं। वर्तमान समय और भविष्य के जॉब के लिहाज से हॉट सिटीज पर एक नजर।

{ जॉब ट्रेंड / कीर्तिशेखर }

करियर और लगातार ग्रोथ करने के लिहाज से इस समय भारत का सबसे अच्छा शहर बेंगलुरु को माना जाता है। सैलरी के मामले में भी इस समय देश के टॉप पांच शहरों में सबसे पहला नंबर बेंगलुरु का ही है और आने वाले अगले पांच सालों तक बेंगलुरु, हैदराबाद, मुंबई, अहमदाबाद, पुणे, चेन्नई और गुरुग्राम यही टॉप करियर शहर होंगे। अगले पांच सालों तक भी भारत के इन्हीं शहरों में सबसे अच्छा भविष्य तलाशने वाले युवक आकर्षित होंगे।

हाई सैलरी देने वाले शहर: 'जॉब्स एंड सैलेरीज प्राइमर फाइनेंशियल ईयर-2024' टीम लीज के हिसाब से बेंगलुरु शहर में औसत समग्र मासिक वेतन 29,500 रुपए है, जो कि देश के बाकी सभी महानगरों के मुकाबले 8 से 15 फीसदी ज्यादा है। इस मामले में एक अखबार ने भी हाल के दिनों में सैलरी और करियर के भविष्य के लिहाज से एक सर्वे किया, रेस फॉर टैलेंट। इस सर्वे में भी बेंगलुरु जूनियर, मिड और सीनियर यानी तीनों ही वेतन श्रेणियों में क्रमशः रुपए 7.2 लाख, रुपए 20.4 लाख और रुपए 37.2 लाख के औसत से शेष सभी भारतीय शहरों में शीर्ष पर है। रैंडस्टैड 2025 रिपोर्ट बताती है कि यहां जूनियर भूमिकाओं का सैलरी पैकेज देश के दूसरे सभी बड़े शहरों के मुकाबले 23 पर्सेंट तक ज्यादा है और मिड लेबल में यह 9 फीसदी ज्यादा है।

ये सिटीज भी बढ़ रहे हैं आगे: एक नए सर्वे (इनडीड) के मुताबिक यह बात भी सामने आ रही है कि हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत तेजी से अगले पांच सालों में सैलरी देने के मामले में देश के टॉप शहर बनने का मुकाबला करेंगे। लेकिन अभी तक ज्यादातर अनुमान यही है कि 2030 तक यह सेहरा बेंगलुरु के सिर पर ही रहेगा। हैदराबाद और चेन्नई के बाद जो तीसरा शहर इस मामले में चौंकाने वाली रफ्तार से, विशेषकर सैलरी के मामले में आगे बढ़कर आ रहा है, यह न तो दिल्ली है, न मुंबई, यह अहमदाबाद है। इसकी हाल के सालों में सैलरी ग्रोथ, दूसरे मेट्रो सिटीज के मुकाबले 20 से 25 फीसदी ज्यादा रही है। हालांकि सर्वे से निकला डाटा कोई तथ्य नहीं होता, जिसके आधार पर माना जाए कि यह बात सौ फीसदी सही है। यह भी एक अनुमान ही है, क्योंकि जहां दूसरे कई डाटा बेंगलुरु को सैलरी के लिहाज से देश का टॉप शहर बता रहे हैं, वहीं इनडीड यह तमगा चेन्नई को दे रहा है।

इसलिए बेंगलुरु है सबसे आगे: बेंगलुरु इस समय ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) हब बन चुका है। भारत के 40 फीसदी से ज्यादा जीसीसी बेंगलुरु में ही हैं। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, गोल्डमैन सैक्स जैसी 250 से ज्यादा बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपने मुख्य कार्यकारी दफ्तरों के साथ बेंगलुरु में मौजूद हैं। यही नहीं ये तमाम कंपनियां अपना आरएंडडी (रिसर्च एंड डेवलपमेंट) सेंटर भी यही चलाती हैं। यहीं से नए उत्पादों और नवाचारों को बाजार में उतारती हैं। इसी तरह बेंगलुरु इस समय देश का स्टार्टअप और डीप टेक इकोसिस्टम का भी हब है। 44 फीसदी भारतीय यूनिकॉर्न बेंगलुरु में ही स्थित हैं या यहीं से निकले हैं। एआई, सेमिकंडक्टर और एयरोस्पेस केंद्रित स्टार्टअप बेंगलुरु में ही हैं और इन्हीं की बदौलत यह शहर वेतन प्रतिस्पर्धा में देश के दूसरे महानगरों के मुकाबले बहुत ऊपर है। बेंगलुरु में टैलेंट क्लस्टर बन चुका है, साथ ही यहां एक नई तरह की टैलेंट ओरिएंटेड जीवनशैली विकसित हो रही है। इस शहर में 20 लाख से ज्यादा आईटी पेशेवर कार्यरत हैं तथा ये दुनिया के गिने चुने उन शहरों में से एक बन चुका है, जो विश्व स्तरीय को-वर्किंग स्पेस मुहैय्या कराते हैं।

हैदराबाद भी है मुकाबले में: हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत पीछे नहीं है। पिछले कुछ सालों में हैदराबाद ने फिर से तेज छलांग लगाई है और विभिन्न सर्वेक्षणों में भले वह अभी बेंगलुरु से थोड़ा नीचे हो, लेकिन माना जाता है कि अगले दो सालों में यानी 2027 तक हैदराबाद नौकरियां उपलब्ध कराने के मामले में बेंगलुरु को भी पीछे छोड़ सकता है। सिर्फ नौकरियां ही हैदराबाद में ज्यादा नहीं पैदा होंगी बल्कि आने वाले दिनों में अनुमान है कि यहां वेतन वृद्धि भी देश के दूसरे शहरों में सबसे ज्यादा होगी। हैदराबाद में वेतन वृद्धि का सबसे तेज रिकॉर्ड पहले रह चुका है और फिर से यह उसी दिशा में आगे बढ़ता लग रहा है। *

{ टेक्नोलाइफ/ लोकमित्र गौतम }

हाल के वर्षों में अंजान लोगों से मिलने, दोस्ती या लव रिलेशन बनाने में डेटिंग एप्स का यंगस्टर्स खूब यूज कर रहे हैं। इनकी पॉपुलैरिटी बढ़ने की वजह, इनके पॉजिटिव-नेगेटिव आस्पेक्ट्स के बारे में जानिए।

डेटिंग एप्स मिलने-मिलाने के नए ठिकाने

आज के दौर में मॉडर्न डेटिंग एप्स, संबंधों की दुनिया में अहम असर डाल रहे हैं। इस 21वीं सदी के दूसरे दशक में दुनिया में रिश्तों के निर्माण की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन आया है। प्रेम पत्रों, पारिवारिक मेल-मिलापों और सामाजिक मेलों की जगह अब मोबाइल स्क्रीन और तरह-तरह के एप्स ने ले ली है। टिंडर, बंबल, हिंज, ओके कुपिड जैसे मॉडर्न डेटिंग एप्स ने आज रिश्तों की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। ये तकनीकी बदलाव सिर्फ अमेरिका या यूरोप तक ही सीमित नहीं हैं, भारत भी पूरी तरह से इनकी चपेट में है, जहां सदियों पुरानी सांस्कृतिक विविधता और जीवन जीने की मजबूत व्यवस्था रही है। लेकिन आज डेटिंग एप्स ने रिश्तों की पारंपरिक दुनिया को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है।

जुड़े हैं करोड़ों यंगस्टर्स: आज दुनिया भर में लगभग 37 करोड़ लोग, जिनमें सबसे बड़ी तादाद युवाओं की है, विभिन्न तरह के डेटिंग एप्स से जुड़े हुए हैं। डेटिंग एप्स का किस कदर चलन बढ़ा है, इसका अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि आज अमेरिका में 30 फीसदी वयस्क लोग किसी न किसी डेटिंग एप का हिस्सा हैं। इन एप्स की शुरुआत तो दो अजनबियों के बीच प्रेम संबंध विकसित कराने के लिए एक मध्यस्थ के रूप में हुई थी, लेकिन आज तरह-तरह के डेटिंग एप्स दोस्ती, कैजुअल मीटिंग, विवाह के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

सबसे पॉपुलर डेटिंग एप्स: दुनियाभर में जिस डेटिंग एप की धूम है, उसका नाम टिंडर है। सौ से ज्यादा देशों में सक्रिय इस एप के अप्रैल 2025 तक साढ़े सात करोड़ रजिस्ट्रर्ड उपयोगकर्ता थे। दूसरे नंबर पर बंबल है, जो विशेष तौर पर महिलाओं को ध्यान में रखकर डेवलप किया गया है, क्योंकि इस एप में महिलाओं को रिश्ता आगे बढ़ाने के लिए पहला कदम रखने की आजादी है। यह एप किसी पुरुष को किसी महिला से संबंध जोड़ने के लिए निर्णय लेने की आजादी नहीं देता। इस एप में सिर्फ महिलाएं ही किसी के साथ को स्वीकार कर सकती हैं या उसे अस्वीकार कर सकती हैं। एक तीसरा पॉपुलर एप हिंज है, जो टेकलाइन के साथ गंभीर रिश्ते विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसके अलावा और लाखों सब्सक्राइबर की क्षमता रखने वाले एप्स हैं, उनमें- ओके कुपिड, ग्रिंडर और प्लेंटी ऑफ फिश डेटिंग एप्स हैं। ये सारे रिश्ते बनाने वाले एप्स अलग-अलग उम्र समूह को ध्यान में रख कर डिजाइन किए गए हैं।

इसलिए बढ़ रही पॉपुलैरिटी: डेटिंग एप्स की लोकप्रियता इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि इनमें सुरक्षा और गोपनीयता की पुख्ता व्यवस्था होती है। इनमें एक एल्गोरिद्म की गुणवत्ता होती है, चाहे मैचिंग सही हो या न सही हो। लेकिन आमतौर पर एक ही एल्गोरिद्म के लोग इनके जरिए आपस में मिलते हैं। इनकी लोकप्रियता का एक और बड़ा कारण यह है कि इन्हें रीजनल या स्थानीय भाषाओं का सपोर्ट सिस्टम भी हासिल है और सबसे बड़ी बात, इनमें एक खास किस्म का यूजर इंटरफेस होता है, जो इसको वास्तविक माहौल का आभास देता है।

पड़ रहा है रिश्तों पर असर: इन मॉडर्न एप्स का हमारे जीवन और रिश्तों की संवेदनशीलता पर भी असर पड़ा है। निश्चित रूप से इनके चलते अब दो युवा लोगों को आपस में मिलना आसान और सुरक्षित हो गया है। पहले कुछ गिने-चुने सौभाग्यशाली लोग ही होते थे, जिनके जीवन में प्यार, मोहब्बत की जगह होती थी। लेकिन इन डेटिंग एप्स के चलते अब कोई भी अपने अनुकूल दोस्ती के लिए साथी की तलाश कर सकता है।

नेगेटिव पहलू भी हैं मौजूद: हालांकि इन एप्स में सब कुछ अच्छा अच्छा ही नहीं है। इनके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। मसलन एप्स की दोस्ती या प्रेम में कमिटमेंट जैसी कोई चीज नहीं होती। बड़ी तादाद में लोग अपनी झूठी और नकली प्रोफाइल बनाकर एक-दूसरे से संपर्क साधते हैं और इस तरह कई तरह के अपराधों को अंजाम देते हैं। *

{ छोटी कहानी
गोविंद भारद्वाज }

कई वर्ष बाद गोपाल अपने गांव लौटा था। वहां उसकी मुलाकात अपने बचपन के दोस्त रामू से हुई। उसका कटा हाथ देखकर गोपाल को बहुत दुख हुआ। लेकिन रामू को अपने दुख से ज्यादा आत्मग्लानि महसूस हुई।

दिव्यांग

बरसों बाद गांव जाने का मौका मिला। तांगा स्टैंड अब टैंपो स्टैंड में बदल चुका था। टैंपो से उतरते ही अपने नाम की आवाज कानों में पड़ी, 'गोपाल...!' मैंने पलट कर देखा। सामने एक चाय की गुमटी थी, जो धुएं में बिल्कुल काली दिखाई दे रही थी। मैंने टैंपो वाले को बीस का नोट दिया और उस दुकान की तरफ बढ़ गया। 'आ भई...आ.. बहुत दिनों बाद गांव की याद आई तुझे।' उसने मुझे दुकान के अंदर बुलाते हुए कहा। मैंने उससे हाथ मिलाने के लिए अपना दायां हाथ आगे बढ़ाया। उसने हाथ तो अपना बढ़ाया, लेकिन दायां नहीं बायां। मेरी नजर उसके दाएं कंधे की ओर गई। मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई। 'यह क्या हुआ रामू?' मेरे मुंह से निकला। 'भाई गोपाल, मुझे माफ कर दे...।' रामू की आंखें नम हो आईं। 'किस बात की माफी भाई...?' मैंने उसके बाएं हाथ को पकड़ते हुए पूछा। 'दोस्त, तू मुझे जी भर कर लूला (हाथ से दिव्यांग) कह सकता है...।' वह रुआंसा हो गया। मैं समझ गया था, वह क्या कहना चाह रहा है? मैं अतीत में चला गया। बात उन दिनों की है, जब मैं गांव में रहा करता था। मेरी मित्र मंडली में यूं तो बहुत से दोस्त थे। सबके सब मुझे प्यार से गोपाल कह कर बुलाते थे, लेकिन रामू एक ऐसा दोस्त था, जो मुझे लंगड़ा (पैर से दिव्यांग) कह कर बुलाता था। दरअसल, मैं जब छह महीने का था, तब मेरे बाएं कूल्हे पर एक फोड़ा हो गया था, जो बाद में नासूर बन गया था। उसी के चलते मेरा बायां पैर खराब हो गया। मैं हमेशा के लिए दिव्यांगता की श्रेणी में आ गया।

गांव से चार किलोमीटर दूर दूसरे गांव में सीनियर हायर सेकेंडरी स्कूल था। वहां हम सब दोस्त मिलकर नौवीं-दसवीं कक्षा में पढ़ते थे। तब रामू सबके सामने मुझे लंगड़ा कह कर ही पुकारता था। अन्य दोस्त उसको खूब समझाते कि गोपाल को 'लंगड़ा' मत बुलाया कर, लेकिन वह था कि मानता नहीं था। स्कूल के शिक्षक भी उसे इस बात के लिए डांटते, लेकिन वह अपनी आदत से बाज नहीं आता।

एक दिन तो तब हद हो गई, जब उसने प्रिंसिपल साहब के सामने ही मुझे लंगड़ा कह दिया। उन्हें उसकी यह बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने उसे पीटा भी। प्रिंसिपल साहब की पिटाई से तो वह और ज्यादा खफा हो गया। अब वह मुझे जब देखो तब लंगड़ा-लंगड़ा कहकर चिढ़ाने लगा। मेरी भी आदत सी हो गई थी, लंगड़ा सुनने की। मैं कभी नहीं चिढ़ता था। लेकिन दूसरों को उसका लंगड़ा कहकर बुलाना अच्छा नहीं लगता था। दसवीं पास करने के बाद मैं आगे की पढ़ाई के लिए शहर चला आया। एमए अंतिम वर्ष के इम्तिहान खत्म हो चुके थे। इसलिए मैंने सोचा क्यों न गांव जाकर पुराने मित्रों से मिला जाए।

'क्या हुआ कहां खो गया गोपाल ...?' रामू ने मेरे हाथ को झटका देते हुए पूछा। 'कुछ नहीं यार, मैं अपने बचपन में खो गया था। खैर बता तेरे दांए हाथ को क्या हुआ?' मैंने पास में पड़े स्टूल पर बैठते हुए पूछा। 'मत पूछ... जैसी करनी वैसी भरनी...। मैंने तुझे कभी तेरे नाम से नहीं बुलाया... तुझे लंगड़ा ही कहा। अब तू मुझे लूला कह सकता है।' उसने भर्राई आवाज में कहा।

'छोड़ यार पुरानी बातों को...तू मेरे लिए रामू है... और रामू ही रहेगा... पर तुमने बताया नहीं यह सब कैसे हुआ?' मैंने पूछा।

रामू चाय का कप मेरे हाथ में थमाते हुए बोला, 'दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद मैं अपने पिताजी के साथ खेती करने लगा। दो साल पहले गेहूं निकालने के लिए खेत में थ्रेसर (अनाज निकालने की मशीन) लगा हुआ था। देर रात तक थ्रेसर पर खड़े रहने की वजह से नींद की झपकी आ गई। मेरा दायां हाथ मशीन में आ गया। जब मुझे होश आया तब मैं अस्पताल में भर्ती था। मेरा दायां हाथ कट चुका था।' 'फिर यह दुकान?' मैंने पूछा।

'दुर्घटना के लगभग एक साल बाद पिताजी ने मेरी छोटी-सी दुकान खुलवा दी। बस यहीं से थोड़ा बहुत कमाकर अपना गुजारा कर लेता हूं ... तू बता क्या कर रहा है आजकल?' उसने अपनी बात खत्म करते ही पूछा। मैंने बताया, 'एमए का इम्तिहान दिया है। आगे प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने की सोच रहा हूं। मेरा लक्ष्य यही है आईएएस बनूं।' मैं उठ कर चलने लगा तो रामू मेरे गले लग गया, बोला, 'गोपाल, अपने दोस्त को माफ तो कर दिया ना...।' मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'रामू मैं तेरे लिए तो अभी भी लंगड़ा ही हूं... तेरे मुंह से गोपाल अच्छा नहीं लगता।' *

प्रेमचंद की धरोहर कहानियां

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

आगामी 31 जुलाई को कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 145वीं जयंती मनाई जाएगी। उनके जाने के लगभग नौ दशक गुजर जाने के बाद आज भी उनका कथा साहित्य अगर प्रासंगिक बना हुआ है तो ऐसा उनकी गहन दृष्टि और सामाजिक-राष्ट्रीय सरोकार से प्रतिबद्धता के कारण ही संभव हुआ है। हाल में प्रकाशित होकर आईं ख्यात आलोचक-संपादक पल्लव के संपादन में दो पुस्तकें 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' और 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' इस बात को और प्रमाणित करती हैं। 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' पुस्तक में संकलित 15 कहानियां आजादी से पहले के भारतीय समाज में धंसी हुई जातिगत मानसिकता को न केवल उजागर करती हैं, बल्कि उस दौर की सामाजिक कुरूपता को भी कठघरे में खड़ा करती हैं। 'सद्गति, ठाकुर का कुआं, कफन, जुरमाना, मंदिर' और 'दूध का दाम' जैसी कहानियां उस काल के सामाजिक विद्रूप को अनावृत करने के साथ आज भी याद आ जाती हैं, जब इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने के बाद भी जाति आधारित भेदभाव से उपजी घटनाएं हमारे समाज में घटित होती हैं।

दूसरी पुस्तक 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' में सोलह ऐसी कहानियां चयनित की गई हैं, जिनमें स्वाधीनता से पहले के भारतीय जनमानस में व्याप्त आजाद होने की आकुलता नजर आती है। इस पुस्तक में संकलित 'सुहाग की साड़ी, जुलूस, बौड़म' और 'शतरंज के खिलाड़ी' आदि कहानियां इस बात को प्रमाणित करती हैं कि पराधीन भारत के आमजन में आजाद होने की कैसी उत्कंठा थी। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसक आंदोलन के प्रति प्रेमचंद के मन में कितनी निष्ठा थी, इस बात को भी ये कहानियां प्रमाणित करती हैं। ये दोनों पुस्तकें शोधार्थियों के लिए तो उपयोगी होंगी ही, प्रेमचंद के वैचारिक वैशिष्ट्य और सरोकारों को भी समझने में सहायक सिद्ध होंगी। *

पुस्तकें: प्रेमचंद की दलित कथाएं और प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं, **संपादक:** पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए (प्रत्येक), **प्रकाशक:** राजपाल एंड संस, दिल्ली

अमेरिकन रेन डांस

बन बंग फाई, थाईलैंड

वर्षा के लिए प्रार्थना करते तिब्बती बौद्ध भिक्षु

वोडू वर्षा नृत्य, हैती

इन दिनों अपने देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून सक्रिय है, खूब बारिश हो रही है। लेकिन कई बार समय पर बारिश नहीं होती है। देश, दुनिया के कई हिस्सों में बारिश न होने पर उसके आह्वान को लेकर कई परंपराएं प्रचलित हैं। यहां बता रहे हैं कुछ ऐसी ही अजब-अनूठी परंपराओं के बारे में।

बहुत अजब-अनोखी हैं

दुनिया में बारिश के आह्वान की रस्में

ट्रेडिशंस

शिखर चंद जैन

एक तरफ जहां अतिवृष्टि वाले क्षेत्रों में लोग भगवान से बारिश रोकने की प्रार्थना करते हैं, वहीं बारिश की कमी वाले दुनिया के कई देशों में लोग बारिश के लिए बादलों, देवताओं और ईश्वरीय शक्तियों का आह्वान करते हैं। इसके लिए तरह-तरह की धार्मिक रीतियों का पालन करते हैं।

अमेरिकी जनजातियों का वर्षा नृत्य: अमेरिका के मैदानी हिस्सों में रहने वाली कई जनजातियों के लोग वर्षा नृत्य करते हैं। यह वर्षा के आह्वान का प्राचीन अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान में पारंपरिक पोशाक और पंखों वाले मुकुट या टोपी पहन कर, हाथों में चील के पंख लिए, घंटों तक एक घेरे में गाना, ढोल बजाना और नृत्य करना शामिल है। ऐसा माना जाता है कि वर्षा नृत्य से वर्षा के देवता खुश होकर वर्षा करते हैं।

बन बंग फाई (रॉकेट महोत्सव): थाईलैंड के इसान रीजन और उत्तर-पूर्वी थाईलैंड के कुछ इलाकों में हर वर्ष जून महीने में यह अनोखा रॉकेट त्योहार खेती के मौसम से ठीक पहले मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान ग्रामीण लोग और भिक्षु, बांस या लोहे के पाइप से रॉकेट बनाने के लिए एकत्रित होते हैं। इस उत्सव में मंदिर या आस-पास के अन्य इलाकों के चारों ओर एक जुलूस निकाला जाता है, जिसके बाद लोग आकाश में रॉकेट छोड़ते हैं। यह क्रिया 'फ्राया थाएन' नामक देवता को अर्पित की जाती है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे मौसम के अनुसार बारिश का होना सुनिश्चित करते हैं।

आदिवासी लोगों का मेंढक नृत्य: ऑस्ट्रेलिया देश के आदिवासी, हजारों सालों से मेंढक नृत्य करते आ रहे हैं। यह नृत्य शुष्क मौसम में किया जाता है, जब मेंढक शांत होते हैं। यह मेंढकों को जगाने और बारिश के आह्वान के लिए किया जाता है। इस नृत्य में मेंढकों की गतिविधियों की नकल करना, मेंढक जैसी आवाजें निकालना, शरीर पर रंग, जानवरों की खाल पहनना, भाले और बूमरैंग लेकर चलना शामिल होता है।

नांग मेव समारोह: थाईलैंड में ही बन बंग फाई के अलावा, थाई किसानों द्वारा देश के मध्य और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में वर्षा के आह्वान के

नांग मेव समारोह, थाईलैंड

लिए नांग मेव समारोह भी मनाया जाता है। जब बुवाई का मौसम आता है, तो किसान अपने गांवों या मंदिरों में नांग मेव (बिल्ली) की परेड निकालते हैं, इस उम्मीद में कि जब बारिश की सबसे ज्यादा जरूरत हो, तब बारिश हो। ऐसा माना जाता है कि बिल्लियां बारिश से डरती हैं और अगर इस समारोह के दौरान कोई बिल्ली रोती है, तो इसका मतलब माना जाता है कि बारिश होने वाली है।

केबो-केबोआन: इंडोनेशिया में केबो-केबोआन पारंपरिक समारोह मनाया जाता है। यह पूर्वी जावा के अलियान और अलस्मलांग गांवों में बान्यूवांगी लोगों द्वारा सदियों से मनाया जाता रहा है। यह समारोह बारिश, अच्छी फसल और शुष्क मौसम में आपदाओं से सुरक्षा की प्रार्थना के लिए किया जाता है। ग्रामीणों का मानना है कि इस परंपरा का पालन ईश्वर की कृपा के प्रति उनकी कृतज्ञता का प्रतीक है और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए पूर्वजों की आत्माओं का आह्वान करता है। भैंसों को इस पारंपरिक समारोह का मुख्य प्रतीक माना जाता है क्योंकि वे किसानों की गतिविधियों और चावल के खेती से गहराई से जुड़े होते हैं। समारोह के दौरान, लोग भैंसों (केबो) की वेशभूषा धारण करते हैं और उनकी भूमिका निभाते हैं, क्योंकि इसमें कोई वास्तविक जानवर शामिल नहीं होता। समारोह की शुरुआत प्रार्थना और टुम्पेंग नामक व्यंजन खाने से होती है। टुम्पेंग, जीवन चक्र के प्रतीक माने जाने वाले, चावल के 12 शंकु के आकार के ढेरों से बना एक व्यंजन होता है।

भिक्षुओं द्वारा मंत्रोच्चार: जब भी सूखा पड़ता है या समय पर बारिश नहीं होती है तो तिब्बती भिक्षु, आकाश और जल के देवी-देवताओं से प्राचीन मंत्रों और प्रार्थनाओं का जाप शुरू कर देते हैं। भिक्षुओं का मानना है कि उनके जाप से वातावरण शुद्ध होता है और वर्षा के लिए आवश्यक परिस्थितियां बनती हैं। यह जाप अकसर पर्वत शिखरों पर किया जाता है।

वोडू वर्षा नृत्य: हैती के लोगों में बारिश बुलाने का अनुष्ठान वोडू वर्षा नृत्य कहलाता है। यह सूखे के दौरान किया जाने वाला एक अनोखा नृत्य है। इसके जरिए कलाकार वोडू धर्म की पवित्र आत्माओं (लोआ) को बारिश के लिए आमंत्रित करते हैं। ❋

भारत में वर्षा संबंधी विभिन्न समारोह

वरुण यज्ञ अनुष्ठान: वरुण यज्ञ अनुष्ठान, वैदिक हिंदू वर्षा आह्वान अनुष्ठान है। यह आज भी भारत के कई हिस्सों में किया जाता है। यह अनुष्ठान सनातन धर्म में जल के देवता वरुण को समर्पित है। इसमें मंत्रोच्चार, अग्नि में आहुति देना और वर्षा हेतु प्रार्थनाएं शामिल होती हैं। यह अनुष्ठान आमतौर पर मानसून के मौसम में उन क्षेत्रों में किया जाता है, जहां बरसात की कमी होती है।

अभिषेकम अनुष्ठान: दक्षिण भारत के किसान विशेष रूप से यह वर्षा-आह्वान अनुष्ठान अपनी उपज बढ़ाने के लिए, वर्षा की प्रार्थना हेतु करते हैं। यह अनुष्ठान हिंदू धर्म में वर्षा के देवता, भगवान इंद्र को समर्पित है। इसमें उनकी मूर्ति पर जल और दूध चढ़ाया जाता है। इसका उद्देश्य वर्षा के देवताओं को प्रसन्न करना और वर्षा लाना है। यह आमतौर पर गर्मी के महीनों में किया जाता है, जब वर्षा कम होती है।

मेंढकों का विवाह: देश के कई हिस्सों, विशेष रूप से उत्तर, मध्य-पश्चिमी राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़ आदि के ग्रामीण और कई आदिवासी इलाकों में मान्यता है कि बारिश न होने पर अगर सामूहिक तौर पर मेंढक-मेंढकी का विवाह करवा दिया जाए तो बारिश होती है।

बढ़ती महंगाई के दौर में किसी एक नौकरी पर पूरी तरह निर्भर रहने के बजाय अगर आप पोर्टफोलियो करियर चॉइस अपनाते हैं, तो इससे आपके करियर ग्रोथ और इनकम के कई रास्ते खुल सकते हैं। पोर्टफोलियो करियर, इसके ऑप्शंस और बेनिफिट्स के बारे में जानिए।

आज के दौर की जरूरत है

पोर्टफोलियो करियर

प्रोफेशनल लाइफ / अंजू जैन

एक जमाना था जब लोग बड़े गर्व से बताते थे कि उन्होंने किसी एक ही बिजनेस फर्म या बड़ी कंपनी में नौकरी शुरू की और 35-40 साल तक काम करके वहीं से रिटायर हो गए। वो दौर पिछली सदी का था। तब किसी कंपनी में आप समर्पण, मेहनत और ईमानदारी से काम करते थे तो आपको नौकरी खोने का इतना डर नहीं होता था। लेकिन अब बहुत कुछ बदल चुका है। कंपनियां जब ले ऑफ करती हैं तो कोई भी उसकी चपेट में आ सकता है। एंप्लॉई भी जहां ज्यादा सैलरी या अच्छा पैकेज देखता है, वहीं चला जाता है। दिनों-दिन बढ़ती कॉस्ट ऑफ लिविंग, शिक्षा और चिकित्सा पर बढ़ा हुआ खर्च आदि को देखते हुए एक जॉब पर पूरी तरह निर्भर रहना ना तो सुरक्षित है, ना बुद्धिमानी। आय के एक से ज्यादा स्रोत रखना और अपनी मल्टीपल प्रोफेशनल आइडेंटिटी रखना आज के वक्त की जरूरत है। इसलिए आपको भी पोर्टफोलियो करियर माइंडसेट के बारे में सोचना चाहिए।

पोर्टफोलियो करियर क्या है: पोर्टफोलियो करियर यानी एक व्यक्ति द्वारा अपनी स्किल्स का प्रयोग करते हुए आय के कई स्रोतों की व्यवस्था करना। इसके अंतर्गत एक फुल टाइम जॉब के साथ-साथ या फिर बिना फुल टाइम जॉब के अलग-अलग कई काम किए जाते हैं। पोर्टफोलियो करियर में साइड हसल, एकाधिक पार्ट टाइम जॉब्स, साइड बिजनेस या फ्रीलांसिंग शामिल हैं।

उदाहरण के लिए एक नौकरीशुदा ग्राफिक डिजाइनर एक से अधिक व्यवसाइयों के लिए लोगो बना सकता है। एक अकाउंटेंट पूर्णकालिक रूप से एक फर्म में काम कर सकता है, साथ ही अपनी प्राइवेट प्रैक्टिस भी कर सकता है।

पोर्टफोलियो करियर के फायदे: पोर्टफोलियो करियर के कई फायदे होते हैं।

बैलेंस्ड पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफ: पोर्टफोलियो करियर अपनाने वाले लोग अपनी सुविधानुसार टाइम टेबल और अपनी पसंद का काम चुन सकते हैं। इसमें अकसर घर से काम करने की छूट होती है, जिससे विभिन्न गतिविधियों, पारिवारिक जिम्मेदारियों या अन्य कामों के लिए आपको समय मिल जाता है। इससे आपको बेहतर वर्क-लाइफ बैलेंस प्राप्त करने में मदद मिलती है।

एक्स्ट्रा इनकम: पोर्टफोलियो करियर के साथ आप कई सोर्सेज से इनकम प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में अगर आपको अचानक नौकरी से निकाल दिया जाता है, तब भी आपका सोर्स ऑफ इनकम बंद नहीं होगा।

नो बाउंडेशन: पोर्टफोलियो करियर के साथ आपको किसी खास तरह की नौकरी के बंधन में नहीं रहना पड़ता। आप अपनी रुचियों को समय देने और उन्हें पोषित करने वाले किसी करियर को परख और चुन सकते हैं। पोर्टफोलियो करियर आपको किसी भी चीज के लिए प्रतिबद्ध हुए बिना विभिन्न अनुभव प्राप्त करने का अवसर देता है।

पोर्टफोलियो करियर शुरू करें ऐसे: अपना पोर्टफोलियो करियर आप कुछ इस तरह शुरू कर सकते हैं।

प्रॉपर प्लानिंग बनाएं: अगर आप अपना पोर्टफोलियो करियर शुरू करने का फैसला करते हैं तो इसकी प्रॉपर प्लानिंग बनाएं और उस पर अमल करें। आप रेग्युलर करियर के साथ-साथ पोर्टफोलियो करियर भी अपना सकते हैं या फिर सिर्फ पोर्टफोलियो करियर भी अपना सकते हैं।

अपनी स्किल्स को समझें: इसके लिए अपनी क्रिएटिविटी, स्किल्स और इंट्रेस्ट पर विचार करें ताकि आप यह निर्धारित कर सकें कि आप किस तरह के काम से इनकम के लिए इनका उपयोग करना चाहते हैं। इसके बाद ही उस दिशा में अपने कदम बढ़ाएं। इससे सफल होने के चांसेज काफी बढ़ जाएंगे।

लोगों के साथ नेटवर्क बनाएं: अपने पोर्टफोलियो करियर को विकसित करने के लिए आप अपने पुराने सहकर्मियों, सहपाठियों, दोस्तों और ग्राहकों के साथ फिर से जुड़ें। उन्हें अपने काम के बारे में बताएं। संभव है कि वे आपके लिए उपयुक्त अवसरों के बारे में बता सकें। वे आपको सलाह, संपर्क, सहायता या यहां तक कि काम भी दे सकते हैं। ❋

भारत की प्राचीनतम नदियों में से एक गंगा को भारतीय संस्कृति में पूज्य एवं जीवनदायिनी माना जाता है। इसका केवल धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व भी बहुत अधिक है। भारतभूमि की जीवनधारा गंगा के प्रवाह और महत्ता पर एक दृष्टि।

सभ्यता-संस्कृति की वाहक

पुण्यसलिला-जीवनदायिनी गंगा

नदी गाथा

वीना गौतम

नदियों के किनारे ही संसार की सभी सभ्यताएं, संस्कृतियां विकसित हुई हैं, फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति लोगों की उदासीनता के कारण धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब तो नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ी को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती में इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फूलती-फलती रहे।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति की पहचान: गंगा भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी ही नहीं है। यह भारतीयता की पहचान और देश की जीवनरेखा भी मानी जाती है। भारतीय जनमानस में इस नदी के प्रति असीम श्रद्धा है। यह न केवल हमें जल प्रदान करती है बल्कि आस्था, सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव की भी वाहक है। देश की सबसे महत्वपूर्ण और पूज्यनीय नदी गंगा को भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवनरेखा माना जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि गंगा में सिर्फ पानी नहीं, एक समूची सभ्यता प्रवाहमान है।

गंगा नदी का प्रवाह तंत्र: गंगा नदी की उत्पत्ति हिमालय के गोमुख हिम नदी से होती है, जहां इसे भागीरथी कहा जाता है। प्रवाह के क्रम में अलकनंदा, जब इस भागीरथी में आ मिलती है, तो उसके बाद से इन दोनों नदियों का संगम गंगा कहलाने लगता है। गंगा भारत की सबसे लंबी नदी है। इसकी लंबाई 2525 किलोमीटर है। गंगा के बेसिन में भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 26 प्रतिशत से ज्यादा भाग आता है। गंगा जिन अपनी सहायक नदियों के चलते देश की सबसे महान नदी बनती है, उन सहायक नदियों में यमुना, घाघरा, गंडक, कोसी और सोन नदी प्रमुख हैं। गंगा उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और

पश्चिम बंगाल से होकर बहती है तथा अंत में बांग्लादेश में प्रवेश कर पद्मा के रूप में बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है।

बसे हैं कई तीर्थस्थल: गंगा नदी देश के अनेक महत्वपूर्ण शहरों से होकर बहती है। साथ ही यह देश के कई पवित्र तीर्थस्थलों की पुण्य सलिला भी है। गंगा नदी के किनारे ही हरिद्वार, ऋषिकेश, वाराणसी, प्रयागराज और गंगा सागर जैसे पवित्र तीर्थस्थल हैं, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय सभ्यता के आधार हैं।

एक जीवंत भौगोलिक संसाधन: भौगोलिक दृष्टि से गंगा बहुत ही महत्वपूर्ण नदी है। गंगा घाटी का क्षेत्र भारत की सबसे उपजाऊ कृषि भूमि के अंतर्गत आता है। इस क्षेत्र में गंगा के जल से सिंचाई, जल परिवहन और पेय जल की लगभग समूची व्यवस्था बनती है, जो इसे एक जीवंत भौगोलिक संसाधन के रूप में बदलती है। गंगा घाटी क्षेत्र में बसने वालों के लिए गंगा सिर्फ एक नदी नहीं बल्कि जीवनधारा है।

धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व: हिंदू धर्म में गंगा को केवल नदी या जलधारा नहीं माना जाता, बल्कि इसे माता, देवी और मोक्षदायिनी का दर्जा प्राप्त है। गंगा के जल को अमृत के तुल्य माना जाता है। इसलिए भारत के हर धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान में गंगा जल का इस्तेमाल होता है। यही नहीं, मोक्ष की कामना रखने वाले हर धार्मिक हिंदू की यह ख्वाहिश होती है कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसके मुंह में गंगा जल की कुछ बूंदें डाली जाएं और उसकी चिता की राख को गंगा नदी में प्रवाहित किया जाए। आरंभ से लेकर आज तक गंगा भारतीय मानस में आस्था एवं श्रद्धा के रूप में प्रवाहित हो रही है। गंगा का उल्लेख वैदिक ग्रंथों से लेकर भारतीय साहित्य, कला, संगीत और लोककथाओं में व्यापक रूप से मिलता है। गंगा का उल्लेख हमारे राष्ट्रगान में भी मिलता है।

गंगा का आर्थिक महत्व: भारत का लगभग 40 फीसदी हिस्सा गंगा के बेसिन क्षेत्र में बसता है और यह क्षेत्र देश के कृषि, उद्योग और व्यापार की दृष्टि से सबसे समृद्ध है। गंगा का जल उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल तथा झारखंड के एक बड़े हिस्से में सिंचाई का सबसे बड़ा स्रोत है। गंगा, यमुना के दोआब की भूमि गेहूं, गन्ना और दलहन की खेती के लिए मशहूर है। हरित क्रांति की सबसे बड़ी प्रयोग भूमि यही गंगा का मैदान था।

गंगा के किनारे कोलकाता, कानपुर, भागलपुर, वाराणसी और पटना जैसे देश के कई औद्योगिक नगर बसे हैं। चमड़ा, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, बिजली संयंत्र, कागज उद्योग जैसे कई औद्योगिक संयंत्र स्थापित हैं। हाल के दशकों में राष्ट्रीय जलमार्ग-1 परियोजना के तहत हल्दिया से वाराणसी तक जल परिवहन को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे गंगा सस्ते और एक पर्यावरण अनुकूल जल परिवहन का भी आधार बन गई है।

चुनौतियां हैं कई: गंगा के समक्ष आज अनेक चुनौतियां भी हैं, जिन्हें दूर किया जाना आवश्यक है। दरअसल, गंगा के जल पर दुनिया में सबसे ज्यादा जनसांख्यिकी दबाव है। जितने लोग गंगा नदी पर आश्रित हैं, उतने लोग दुनिया में किसी और नदी पर अपने जीवनयापन और सभी तरह की पहचान के लिए आश्रित नहीं हैं। इसलिए गंगा पर अतिरिक्त जन दबाव, औद्योगिक प्रदूषण, अपशिष्ट जल के साथ-साथ धार्मिक कर्मकांडों एवं प्रदूषण की भी मार है। गंगा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। नमामि गंगे मिशन जैसी योजना चलाई जा रही है। अनेक जलशुद्धि सयंत्रों की स्थापना की गई है। ❋

हिंदी फिल्में नायक, नायिका और खलनायकों के बॉलीवुड में अपने पैर जमाने में मदद करती रही हैं, एक बड़ी पहचान दी है। इसके साथ इनके पैरों का फिल्मों में बहुत ही करिश्माई अंदाज में फिल्मांकन हुआ, जिसने सस्पेंस, रोमांच, एक्शन, रोमांस क्रिएट करके फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने में इंपॉर्टेंट रोल अदा किया है। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

पर्दे पर पैरों का करिश्मा

सिने ट्रेंड

हेमंत पाल

हिंदी सिनेमा की शुरुआत से लेकर आज तक कई सितारों ने अपनी काबिलियत के दम पर फिल्म इंडस्ट्री में अपने पैर जमाए। कई बार तो नायक-नायिकाओं के पैरों के फिल्मांकन ने फिल्म इंडस्ट्री में उनके पैर जमाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

फिल्म में हीरो से पहले उसके पैरों की एंट्री: फिल्म 'फूल और पत्थर' में नायक धर्मेंद्र की एंट्री छोटे-छोटे पैरों से सड़क पर चढ़ते हुए और बड़े पैरों से सड़क से उतरते हुए थी, जिसे बहुत पसंद किया गया। इसके बाद तो कई फिल्मों में पैरों का शॉट दिखाकर नायक को बच्चे से बड़ा दिखाने के प्रयोग किए गए।

पैरों ने क्रिएट किया सस्पेंस-एक्शन: देव आनंद की 'ज्वेल थीफ' में भी पांव को लेकर सस्पेंस दिखाया गया। नायिका कहती है कि नायक के पैरों में छह अंगुलियां हैं, वह पैर दिखाए। लेकिन वह टालमटोल करता है, जिससे सस्पेंस बढ़ता जाता है। बाद में नायक जिस अंदाज से मौजे उतारता है, वह दृश्य देखने लायक होता है। फिल्म 'शोले' में हाथ कटे ठाकुर (संजीव कुमार) की असमर्थता तब शौर्य में बदल जाती है, जब फिल्म के क्लाइमेक्स में वह अपने पैरों में पहने कील लगे जूतों से गब्बर सिंह (अमजद खान) को मारता है। ठाकुर के पैर की हर ठोकर पर सिनेमा हॉल तालियों और सीटियों से गूंज उठता। 'शोले' में ही गब्बर सिंह को भी चट्टान पर बेल्ट लेकर घूमते दिखाया गया, तब कैमरा उसके पैरों पर ही फोकस होता है।

शम्मी कपूर की फिल्म 'चायना टाउन' में नायक के हमशक्ल के पैरों का आकार छोटा होने से कहानी में मोड़ आता है, तो सलीम जावेद ने 'यादों की बारात' में एक नया प्रयोग किया। इसमें खलनायक अजीत के दोनों पैरों के आकार में

'शोले' में अमजद खान के साथ संजीव कुमार

'उपकार' में मलंग के किरदार में प्राण

अंतर होता है। वह एक पैर में 9 नंबर और दूसरे पैर में 10 नंबर का जूता पहनता है। फिल्म के क्लाइमेक्स में जब टेबल पर अजीत के दोनों जूते दिखाए जाते हैं, तो फिल्म के नायक धर्मेंद्र उसे पहचान लेते हैं। इसके साथ ही फिल्म का रोमांच चरम सीमा पर पहुंच जाता है।

नायिकाओं के हसीन पैर: हिंदी फिल्मों में नायिका के हसीन पैरों पर भी कई आइकॉनिक दृश्य और गीत फिल्माए गए। फिल्म 'पाकीजा' में मीना कुमारी के पैरों की खूबसूरती ने खूब करिश्मा किया। बिना चेहरा देखे, रेल की सीट पर मीना कुमारी के पैर देखकर राजकुमार एक चिट्ठी छोड़ जाते हैं, जिस पर लिखा होता है 'आपके पांव देखे, बहुत हसीन हैं, इन्हें जमीन पर मत उतारिएगा, मैले हो जाएंगे।'

याद कीजिए फिल्म 'शोले' का वो डायलॉग जिसमें गब्बर सिंह बसंती से कहता है 'जब तक तेरे पैर चलेंगे, उसकी सांस चलेगी। जब तेरे पैर रुके, तो ये बंदूक चलेगी।'

फिल्म 'मिस मेरी' में बचपन में बिछड़ी नायिका के पैरों की छह अंगुलियां, उसे अपने परिवार से मिलाती है तो 'नाचे मयूरी' में सुधा चंद्रन के नकली पैरों से नर्तकी बनने की कहानी कही गई।

जब नायिकाओं के पैरों की बात आती है, तो जाहिर है वह सुंदर तो होंगे ही। 'मेरे पांव में मेहंदी लगी है', 'आजकल पांव जमीं पर नहीं पड़ते मेरे', 'पांव छू लेने दो फूलों को इनायत होगी', जैसे कितने ही मधुर और सदाबहार गीत नायिका के पैर को ध्यान में रखकर रचे गए।

पैरों से उभारी गई संवेदना: कई फिल्मों में नायक के पैरों को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया गया, जिससे रोमांच के साथ-साथ संवेदना भी जगती है। मिसाल के तौर पर राजश्री प्रोडक्शन की फिल्म 'दोस्ती' को देखा जा सकता है। एक पैर से दिव्यांग और आंख की रोशनी खो चुके व्यक्ति की दोस्ती पर आधारित इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर लंबी दौड़ लगाते हुए उस समय की कई फिल्मों को पीछे छोड़ दिया था। फिल्मों में गरीबी और मजबूरी दिखाने के लिए भी निर्माताओं ने कभी नायक को, कभी नायिका को तो कभी सहनायिका या सहनायक को पैरों से दिव्यांग बनाने का फार्मूला आजमाया। 'उपकार' का मलंग, 'हीर रांझा' का एक पैर से अशक्त मामा, 'सच्चा झूठा' और 'मजबूर' की पैरों से दिव्यांग बहन ने दर्शकों को भावुक कर दिया। इसी तरह फिल्म 'शान' में चलने में अक्षम अब्दुल (मजहर खान) का मुखबिर का किरदार भी काफी लोकप्रिय हुआ था। ❋

राजकुमार के पैर और सफेद जूते

याद कीजिए फिल्मों के वे सीन, जिनमें पर्दे पर हीरो से पहले उसके सफेद जूते दिखाए जाते थे और दर्शक जान जाते थे कि अब सीन में किसकी एंट्री होने वाली है। 'हमराज' और 'वक्त' में राजकुमार की जानदार एंट्री तो आपको याद ही होगी। इन फिल्मों में जैसे ही परदे पर राजकुमार के सफेद जूते दिखाई देते, दर्शक तालियों से उनका स्वागत करते। राजकुमार खुद इस तथ्य से वाकिफ थे, वे अकसर बी.आर. चोपड़ा से मजाक में कहा करते थे, 'जानी, सुना है आजकल आप हमारे जूतों की कमाई खा रहे हैं।'